ISBN : 978-93-343-1013-9

शिक्षा में अभिनव प्रयोग: डीएवी किड्स केयर, फतेहपुर

- डॉ० राजीव अग्रवाल
- कृष्ण कुमार यादव

शिक्षा में अभिनव प्रयोग: डीएवी किड्स केयर, फतेहपुर

डॉ० राजीव अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर

अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

कृष्ण कुमार यादव

बी.एससी., बी.एड., एम.एड

शिक्षा में अभिनव प्रयोग: डीएवी किड्स केयर, फतेहपुर

डॉ० राजीव अग्रवाल

कृष्ण कुमार यादव

©सर्वाधिकार सुरक्षित

E-book संस्करण: 2025

मूल्य: ₹ 99

ISBN: 978-93-343-1013-9

प्रकाशक—

कृष्ण कुमार यादव

कोतवाली रोड बबेरू

जिला, बाँदा (उत्तर प्रदेश)

पिन कोड — 210121

मो.— 8543088065

ई-मेल:krishna2012banda@gmail.com

प्राक्कथन

आज अपने देश के तथाकथित जागरुक लोग जहाँ चमकीली-भडकीली-नखरीली-खर्चीली, किन्तु सर्वनाशकारी जहरीली अंग्रेजी-मैकाले शिक्षण पद्धति के स्कूलों-कॉलेजों से प्रवाहित भिन्न-भिन्न तरह की डिग्रियाँ हासिल करने के बहाव में बह रहे हैं, वही गीतांजली सिंह उस बहाव के विपरीत दिशा में इत्मीनान से तैर रही हैं। बहाव के विपरीत दिशा में सिर्फ अपनी जान लेकर अकेले तैरना भी निरापद नही है, जबकि गीतांजली सिंह तो अपने साथ सैकड़ों बच्चों तथा उनके पालकों को भी लिए हुए तैर रही हैं।

धारा के विरुद्ध मैकालेवाद से युद्ध करते हुए प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति की ज्योति थामे हुए गीतांजली सिंह का मानना है कि वर्तमान समय की समस्त समस्याओं की जड़ है अंग्रेजी शिक्षा पद्धति, जो डिग्रियाँ बांटती हैं और लोगों को स्वार्थी बनाती है इनके डीएवी किड्स केयर के विद्यार्थियों की प्रतिभा योग्यता, डिग्रियां एवं ज्ञान की समग्रता से युक्त है। यहाँ का एक अदना सा विद्यार्थी मैकाले-स्कूलों के हर विद्यार्थी पर हर तरह से भारी है। गीतांजली जी बच्चों पर ज्ञान बघारती नही हैं, बल्कि उनके भीतर की प्रतिभा को सर्वोत्तम भारतीय रीति से निखारती हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का शीर्षक है, **"शिक्षा में अभिनव प्रयोग: डीएवी किड्स केयर"।** इस शोध को अग्रांकित षष्ठ अध्यायों मे विभाजित किया गया है-

- **प्रथम अध्याय** में वैदिक कालीन शिक्षा, अध्ययन उद्देश्य, अध्ययन विधि, अध्ययन का परिसीमांकन, अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता पर प्रकाश डाला गया है।
- **द्वितीय अध्याय** में सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के अन्तर्गत शिक्षा में अभिनव प्रयोग से संबंधित शोध अध्ययन में कतिपय समीक्षा की गई है।
- **तृतीय अध्याय** में चयनित स्कूल "डीएवी किड्स केयर" के संस्थापक का जन्म एवं शिक्षा, सामाजिक कार्य, उपलब्धियाँ शैक्षिक चिंतन एवं सुझाव पर प्रकाश डाला गया है।
- **चतुर्थ अध्याय** में डीएवी किड्स केयर का परिचयात्मक विवरण दिया गया हैं।
- **पंचम अध्याय** में डीएवी किड्स केयर की विशिष्टताओं एवं उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है।
- **षष्ट अध्याय** में शोध अध्ययन से सम्बधित निष्कर्ष एवं सुझाव प्रस्तुत किए गये हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध का उद्भव, विकास एवं पूर्णता श्रद्धेय डॉ. राजीव अग्रवाल जी के सफल व अनुभवी निर्देशन के फलस्वरुप अस्तित्व में आया। उनका स्नेह व वात्सल्य मुझे निरन्तर आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करता रहा। शोध कार्य

के समय सर्वदा मिलने वाला स्नेहिल साहचर्य ही इस शोध प्रबन्ध की पूर्णता का एकमात्र रहस्य है। उनकी कृपा व स्नेह के लिए कृतज्ञता ज्ञापन की औपचारिकता का निर्वाह इतना तुच्छ है कि मन संकोच की अनुभूति कर रहा है।

मैं अपने समस्त गुरुजनों के प्रति हृदय से आभारी हूँ जिनके आशीर्वाद व मधुर व्यवहार के चलते मेरा धैर्य बना रहा और प्रस्तुत शोध पूरा हुआ।

सम्पूर्ण शोध कार्य को पूरा करने के लिए मैं अपने माता-पिता एवं परिवार के सभी सदस्यों की जन्मधर ऋणी रहूँगा जिन्होंने मुझे हर पल आगे बढ़ाने में सहयोग प्रदान किया।

अन्त में, मैं उन ज्ञात-अज्ञात लोगों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझे किंचित मात्र भी सहयोग प्रदान किया।

मुझे आशा है कि विद्वानजन एवं मेधावीगण मेरे इस शोध-प्रबन्ध की परिहार्य एवं अपरिहार्य त्रुटियों को क्षमा करते हुए शोध-प्रबन्ध का सम्यक् मूल्यांकन करेंगे।

सादर!

शोधकर्ता

दिनांक-

स्थान- **(कृष्ण कुमार यादव)**

अनक्रमणिका

अध्याय	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
प्रथम अध्याय	अध्ययन परिचय	1-14

1.1 प्रस्तावना

1.1.1 शिक्षा: विकास की प्रक्रिया

1.1.2 वैदिक कालीन शिक्षा

1.1.3 भारत में वैदिक कालीन शिक्षा

1.1.4 वैदिक कालीन गुरुकुल

1.1.4.1 स्थिति एवं महत्व

1.1.4.2 प्रवेश

1.1.4.3 उपनयन संस्कार

1.1.5 आधुनिक कालीन शिक्षा प्रणाली

1.1.6. भारतीयता के सम्बन्ध में विभिन्न शिक्षा आयोगों के सुझाव

1.1.7. समाज सुधारकों के शैक्षिक प्रयास

1.2. समस्या का प्रादुर्भाव

1.3. समस्या कथन

1.4. समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

1.4.1. शिक्षा

1.4.2. अभिनव प्रयोग

1.4.3. डीएवी किड्स केयर

1.5. अध्ययन के उद्देश्य

अध्याय	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
	1.6 अध्ययन विधि	
	1.7. अध्ययन का परिसीमांकन	
	1.8. अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता	
द्वितीय अध्याय	सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण	15-19
	2.1 प्रस्तावना	
	2.2 अध्ययन से सम्बन्धित शोध अध्ययन	
	2.3 निष्कर्ष	
तृतीय अध्याय	संस्थापक परिचय एवं दर्शन	20-26
	3.1. गीतांजली सिंह का जन्म एवं शिक्षा	
	3.2. गीतांजली सिंह के सामाजिक कार्य	
	3.3 गीतांजली सिंह की उपलब्धियाँ	
	3.4 गीतांजली सिंह का शैक्षिक चिन्तन	
	3.5 गीतांजली सिंह का समाज के लिए सन्देश	
	3.6 गीतांजली सिंह का साक्षात्कार	
चतुर्थ अध्याय	डीएवी किड्स केयर का परिचयात्मक विवरण	27-49
	4.1 डीएवी का इतिहास	
	4.2 किड्स केयर का शुभारंभ	
	4.2.1 किड्स केयर स्कूलों का इतिहास	
	4.2.2 किड्स केयर स्कूलों के विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	
	4.3 भारत में किड्स केयर स्कूलों का विकास	
	4.4 स्कूल के उद्देश्य: एक विस्तृत दृष्टिकोण	

अध्याय	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
	4.5 किड्स केयर स्कूल का उद्देश्य: बच्चों का सर्वांगीण विकास	
	4.6 डीएवी किड्स केयर स्कूल की स्थापना	
	4.7 डीएवी किड्स केयर स्कूल में की जाने वाली गतिविधियाँ	
	4.8 डीएवी किड्स केयर में प्रवेश प्रक्रिया	
	4.9 डीएवी किड्स केयर में कक्षा स्तर	
	4.10 डीएवी किड्स केयर स्कूल में गणवेश	
	4.11 डीएवी किड्स केयर स्कूल में अनुशासन	
	4.12 डीएवी किड्स केयर में कार्य अवधि	
	4.13 डीएवी किड्स केयर में दिनचर्या	
	4.14 डीएवी किड्स केयर में में प्रार्थना सत्र:	
	4.15. डीएवी किड्स केयर में प्रक्षालन व्यवस्था	
पंचम अध्याय	**डीएवी किड्स केयर की विशिष्टताएँ एवं उपलब्धियाँ**	50-52
	5.1. "मैकाले-पुत्र" नहीं, "महर्षि-पुत्र" का निर्माण	
	5.2. निःशुल्क वैदिक कार्यशाला का आयोजन	
	5.3. विद्या, कला व कौशल का त्रिवेणी संगम	
	5.4. समग्र एवं सर्वांगीण विकास	
	5.5. पेयजल व्यवस्था	
	5.6. भारतीय शिक्षण पद्धति की सुव्यवस्था	
	5.7. स्वास्थ्यदायक आहार	
	5.8. उपलब्धियाँ	

अध्याय	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
षष्ठ अध्याय	**निष्कर्ष एवं सुझाव**	53-58
6.1.	निष्कर्ष	
6.2.	शैक्षिक उपादेयता	
6.3.	अध्ययन के सुझाव	
6.4.	भावी शोध हेतु सुझाव	
6.5	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	
	परिशिष्ट	59-63
I.	डीएवी किड्स केयर अवलोकन चित्रावली	
II.	डीएवी: चित्रों के झरोखों से	
III.	फतेहपुर जिला मैप	
IV.	जीवन वृत्त	

अध्याय प्रथम

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

मानव को मानवीय गुणों से सुशोभित करने के समस्त संसाधनों में शिक्षा सर्वोत्तम साधन है। वह व्यक्ति में व्यवहारिकता एवं आदर्श का सुन्दर समन्वय करती है परन्तु वर्तमान में प्रचलित शिक्षा प्रणाली भारतीय शिक्षा के मूल भावों से भटक कर पाश्चात्य शिक्षा जगत एवं प्राणाली को अपना रही है। आज के तथाकथित शिक्षित एवं विद्वान भारतीय संस्कृति के मूल भावना को नहीं समझ पा रहे हैं। जब अपनी शिक्षा प्रणाली में हम भारतीय दर्शन, संस्कृति एवं भारतीय विद्वानों के शैक्षिक विचारों को कोई स्थान नहीं देते हैं तो भारत की शिक्षा उन उच्च आदर्शों से अनुप्राणित कैसे हो सकती है जो भारत को भारत बनाती हैं।

कौशलों का प्रशिक्षण देने तक सीमित नही है इसे शिक्षित व्यक्ति को मूल्य का विचार भी प्रदान करना है वैज्ञानिक एवं तकनीकी व्यक्ति भी नागरिक है अतः जिस समुदाय में वे रहते है उस समुदाय के प्रति भी उनका सामाजिक उत्तरदायित्व है।"

आज भारत में फैली सामाजिक बुराइयों, नैतिकता आज की शिक्षा को केवल ज्ञान देने का साधन ही माना जा रहा है।परन्तु शिक्षा जब तक जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती, तब तक वह शिक्षा नहीं कही जा सकती। इस संबंध में महान विचारक डॉ० राधाकृष्णन जी ने कहा है- "शिक्षा सूचना प्रदान करने एवं का ह्रास, अनुशासनहीनता, मूल्यों का ह्रास आदि समस्याओं का हल हमारी व्यवस्था में सुधार लाकर ही किया जा सकता है। इसके लिए शिक्षा प्रणाली में भारत की जनता की आवश्यकता एवं आकांक्षा के अनुरूप बदलाव लाना होगा। हमारी भारतीय आर्य परंपरा में विद्या प्राप्ति की मुख्य व्यवस्था के रूप में गुरुकुलम् एवं पाठशालाएँ केन्द्र स्थान पर थे। आज से 200 वर्ष पहले तक जिस प्रकार की उत्तम शिक्षा भारत में दी जाती थी, वैसी विश्व के किसी भी देश में नहीं दी जाती थी। अंग्रेजों के आगमन से पहले शिक्षा और विद्या के क्षेत्र में भारत दुनिया के देशों में सबसे अग्रणी था। मनुष्य के आंतरिक गुणों को उजागर करके उसके दोषों का निर्मूलन करने वाली महान भारतीय शिक्षा प्रणाली को विदेशी आक्रमणों का कुठाराघात सहना पड़ा।

ध्वस्त हुई प्राचीन शिक्षा प्रणाली को पुनः जीवित किए बिना भारतीय प्रजा एवं संस्कृति का समुद्धार असंभव है। अतः इस परंपरा को पुनः प्रस्थापित करना अत्यंत आवश्यक है। तभी, मैकाले शिक्षा के दुष्प्रभाव से हमारी आज की दुर्दशा जो हुई है, उससे हम भारत को बचा पाएंगे।

1.1.1 शिक्षाः विकास की प्रक्रिया

शिक्षा विकास की प्रक्रिया है जिसमें समाज एक पीढी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तान्तरण का प्रयास करता है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखती है। बच्चा शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों, व्यवस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता हैं। बच्चा समाज से तभी जुड़ पाता है जब वह उस समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है।

शिक्षा मानव को एक अच्छा इंसान बनाती है तथा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है। शिक्षा शब्द का अर्थ होता है- सीखने सिखाने को क्रिया।

शिक्षा एक सापेक्ष, चेतन अथवा अचेतन, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, वैज्ञानिक एवं दार्शनिक वातावरण सम्बन्धी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व सम्बन्धी सभी अंगों का विकास इस प्रकार से होना चाहिए कि वह परिवर्तन विरोधी तथा रचनात्मक साधनों के द्वारा सच्चा सुख और आनंद प्राप्त कर सके। वास्तव में शिक्षा वातावरण सम्बन्धी सुविचार प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव का विकास तथा समाज का कल्याण होना चाहिए। रिमोट ने भी शिक्षा को विकास की सचेतन तथा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया माना है जिसके द्वारा मनुष्य अध्यात्मिक, भौतिक तथा सामाजिक आदि सभी प्रकार के विभिन्न वातावरणों से समायोजन प्राप्त करना सीख जाये।

1.1.2 वैदिक कालीन शिक्षा

लगभग 2500 ई०पू० से 500 ई०पू० का समय वैदिक काल कहा जाता है। वैदिक काल में शिक्षा का प्रारम्भ ऋग्वेद के रचना काल लगभग 2500 ई.पू. से माना जाता है कुछ इतिहासकार इसे ब्राह्मण काल की संज्ञा देते हैं क्योंकि इस काल में शिक्षा एवं सामाजिक व्यवस्था पर ब्राह्मणों का एक मात्र आधिपत्य था।

कुछ अन्य इतिहासकारों ने इस काल को कई उपकालों वैदिककाल, उत्तरवैदिककाल, ब्राह्मणकाल उपनिषद्काल, सूत्रकाल और स्मृति काल में विभक्त करके वर्णन किया है। इन सभी उपकालों में वेदों की प्रधानता थी तथा

शिक्षा का अर्थ, उद्देश्य तथा अन्य बातें लगभग एक समान थीं अतः वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था वेदों की शिक्षा दी जाती थी।

वैदिक काल में शिक्षा से अभिप्राय वेद कालीन शिक्षा से है क्योंकि वैदिक काल मूलतः वेदों पर आधारित होता था। इस काल की शिक्षा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए वेद ही एक मात्र स्रोत थे। वेदों में शिक्षा शब्द का प्रयोग विद्या, विनय और बोध आदि अर्थों में हुआ है। शिक्षा को अन्तर ज्योति माना जाता था जिसे प्राप्त करके मनुष्य संसार के सभी बन्धनों से मुक्त होकर जनम-मरण से छुटकारा प्राप्त करता था अर्थात मोक्ष पा लेता था, क्योंकि इस काल में जीवन का मुख्य लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना था।

इस प्रकार, वैदिक काल में शिक्षा लौकिक नहीं होकर अध्यात्मिक थी और परमब्रह्म का ज्ञान प्राप्त करने का मुख्य साधन था। इस काल में पुस्तकीय ज्ञान प्राप्त करने को शिक्षा नहीं माना जाता था और न ही शिक्षा को जीविकोपार्जन का साधन, वरन शिक्षा को ज्ञान का वह प्रकाश-कुंज माना जाता था जो मनुष्य के अज्ञानतारुपी अंधकार को मिटाकर, सर्वांगीण विकास कर सके।

डॉ. ए.एस. अलतेकर ने कहा है- "वैदिक युग से लेकर आज तक भारत में शिक्षा का मूल तार्त्पय यह रहा है कि शिक्षा प्रकाश का वह स्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ प्रदर्शन करती है।**"**

1.1.3 भारत में वैदिक कालीन शिक्षा

भारत में औपचारिक शिक्षा मंदिरों, आश्रमों और गुरुकुलों के माध्यम से दी जाती थी ये उच्च शिक्षा के केंन्द्र भी थे। विभिन्न धर्मसूत्रों में इस बात का उल्लेख है कि माता ही बच्चे की श्रेष्ठ गुरु है। कुछ विद्वानों ने पिता को बच्चे के श्रेष्ठ शिक्षक के रूप में स्वीकार किया है जैसे-जैसे सामाजिक विकास हुआ वैसे-वैसे शैक्षणिक संस्थाएं स्थापित होने लगीं। वैदिक काल में परिषद, शाखा और चरण जैसे संघों को स्थापित कर दिया गया था।

गुरुकुलों की स्थापना प्रायः वनों, उपवनों तथा ग्रामों या नगरों में की जाती थी। वनों में गुरुकुल बहुत कम होते थे अधिकतर दार्शनिक आचार्य निर्जन वनों में निवास, अध्ययन तथा चिन्तन पसन्द करते थे। वाल्मीकि, सन्दीपनी, कण्व आदि ऋषियों के आश्रम वनों में ही स्थित थे और इनके यहाँ दर्शन शास्त्रों के साथ-साथ व्याकरण, ज्योतिष तथा नागरिक शास्त्र भी पढ़ाये जाते थे। अधिकांश गुरुकुल गांवों या नगरों के समीप किसी बाग अथवा वाटिला में बनाए जाते थे जिससे उन्हें एकान्त एवं पवित्र वातावरण प्राप्त हो सके। इससे दो लाभ थे, एक तो गृहस्थ आचार्यों को सामग्री एकत्रित करने में सुविधा थी, दूसरे ब्रह्मचारियों को भिक्षाटन में अधिक भटकना नहीं पड़ता था। मनु के अनुसार 'ब्रह्माचरी' को गुरु के कुल में, अपनी जाति वालों में तथा कुल बांधवों के यहां से भिक्षा याचना नहीं करनी चाहिए, यदि भिक्षा योग्य दूसरा घर नहीं मिले, तो पूर्व-पूर्व गृहों का त्याग करके भिक्षा याचना करनी चाहिए। इससे स्पष्ट होता है कि गुरुकुल गांवों के सन्निकट ही होते थे।

स्वजातियों से भिक्षा याचना करने में उनके पक्षपात तथा ब्रह्मचारी के गृह की ओर आकर्षण का भय भी रहता था, अतएव स्वजातियों से भिक्षा याचना का पूर्ण निषेध कर दिया गया था। बहुत से राजा तथा सामंतों का प्रोत्साहन पाकर विद्वान पंडित उनकी सभाओं की ओर आकर्षित होते थे और अधिकांश उनकी राजधानी में ही बस जाते थे, जिससे वे नगर शिक्षा के केंन्द बन जाते थे। इनमें तक्षशिला, पाटलिपुत्र, कान्यकुब्ज, मिथिला, धारा, तंजोर आदि प्रसिद्ध हैं। इसी प्रकार तीर्थ स्थानों की ओर भी विद्वान आकर्षित होते थे। फलतः काशी, कर्नाटक, नासिक आदि शिक्षा के प्रसिद्ध केन्द्र बन गये। गुरुकुलों और आश्रमों से शुरू हुआ शिक्षा का सफर उन्नति करते हुए विश्वविद्यालयों में तब्दील होता गया। पूरे भारत में प्राचीन काल में 13 बड़े विश्वविद्यालयों या शिक्षण केन्द्रों की स्थापना हुई।

8वीं शताब्दी से 12वीं शताब्दी के बीच भारत पूरे विश्व में शिक्षा का सबसे बड़ा और प्रसिद्ध केन्द्र था। गणित, ज्योतिष, भूगोल, चिकित्सा विज्ञान के साथ अन्य विषयों की शिक्षा देने में भारतीय विश्वविद्यालयों के बराबर कोई नहीं था।

1.1.4 वैदिक कालीन गुरुकुल

गुरुकुल का शाब्दिक अर्थ-गुरु का कुल अर्थात, गुरु का परिवार। छात्र गुरु के घर में रहकर जहाँ शिक्षा प्राप्त करते थे,उन्हें गुरुकुल कहते थे। गुरुकुलों में सबसे नीचे के छात्रों को छोड़कर सब गुरु ही गुरु हुआ करते थे, इसलिए उन्हें गुरुकुल कहा जाता था। ये गुरुकुल गुरुओं के नाम से प्रसिद्ध थे।

- **स्थिति एवं महत्व**

गुरुकुल प्रायः बस्तियों के कोलाहल से दूर नदी या सरोवर के निकट किसी वन या उपवन में होता था। जहाँ आश्रम की गायें, कुश एवं समिधा प्राप्त करने, विद्याध्यायन, व्यायाम एवं धनुर विद्या का अभ्यास करने, ब्रह्मचारियों आदि के निवास के लिए पर्याप्त स्थल एवं स्वच्छ जलवायु उपलब्ध होती थी।

- **प्रवेश**

प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त बालक गुरुकुल में प्रवेश के सुयोग्य हो जाता था। विद्याध्यायन के पूर्व ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के बालकों का उपनयन संस्कार होता था।

- **उपनयन संस्कार**

गुरोः समीपे नयनम्- उपनयनम्

(इसका अभिप्राय बालक को शिक्षा ग्रहण करने के लिए गुरु के पास ले जाने से है)

किसी शुभ मुर्हुत में बालक का उपनयन संस्कार करने की परंपरा थी। बसन्त ऋतु में ब्राह्मण बालक, ग्रीष्म ऋतु में क्षत्रिय बालक तथा पतझड़ अर्थात् शिशिर ऋतु में वैश्य बालक का उपनयन संस्कार किए जाने का विधान था। संस्कार सम्पन्न होने के एक दिन पूर्व गणेश, लक्ष्मी, मेधा, सरस्वती आदि की पूजा की जाती थी तत्पश्चात बालक के बाल बनवाकर स्नान

कराया जाता था और कौपीन धारण करने को दिया जाता था। उपनयन के समय गुरु बालक का नाम पूछता था और बालक को उसके वर्णानुसार वस्तुयें प्रदान करता था। वस्तुओं को धारण करने के पश्चात छात्र का यज्ञोपवीत संस्कार होता था जिसमें गुरु उन्हें उपदेश देता था। इसके पश्चात बालकों को गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति दी जाती थी।

1.1.5 आधुनिक शिक्षा प्रणाली

वर्तमान शिक्षा जिस पर आधुनिकता और भौतिक संसार्वाद के लक्ष्य को आधार मानकर युवा पीढ़ी को शिक्षित करने का एक नया दौर जन्म ले चुका है और यही आज की वर्तमान शिक्षा पद्धति का सबसे भयानक रूप है जो आर्थिक रूप से सक्षम व्यक्तियों तक ही पहुँच कायम लिए हुए है। जो आर्थिक रूप से सक्षम नहीं है उनसे वर्तमान शिक्षा कोसों दूर है। आज इस बात पर जोर नहीं कि मानव को मानव के रूप में तैयार किया जाए, बल्कि मानव को मशीन बनाने का प्रयास जोरों पर है। यह एक प्रकार से देश की सांस्कृतिक धरोहर को दमन करने का एक ऐसा प्रयास है जिसके परिणामस्वरूप संस्कृति और संस्कारों के विनाश का ऐसा चक्र चलेगा जो मानव को केवल भौतिक संसाधनों की उपलब्धि न होकर आध्यात्मिकता और जीवन जीना है जो उसके जीवन में शान्ति और आध्यात्मिक सुख को संचालित करता है और उसे उस परम तत्व का बोध कराता है जिसके लिए हमारे पूर्वजों ने हजारों वर्षों के अपने अथक प्रयास से सींचकर संस्कृति और संस्कारों के ररूप में पल्लवित किया है। आज पाश्चात्य संस्कृति के बहाव और काम के प्रभाव ने मानव को अमानुष बना कर रख दिया है जो इस युग के अन्त का परिचायक है।

"सर्वे भवन्तु सुखिनः" जो हमारे पूर्वजों व धार्मिक ग्रन्थों का मूलमन्त्र होता था, आज यह "सर्व एवं मम" तक संकुचित होकर रह गया है। हजारों वर्षों के प्रयासों के परिणामस्वरूप हमने जो मन्त्रों के रूप में धरोहर प्राप्त की और हम आज भी उनके वास्तविक उद्देश्य से परिचित हैं फिर भी न जाने क्यों इस आधुनिकता नामक विष ने हमें एक ऐसे अन्धकारमय कुएं में धकेल दिया है जहाँ से बाहर आ पाना मुमकिन ही नहीं नामुमकिन है।

- **उद्देश्य**

देश के विकास के लिए मानवीय संसाधनों को विकसित करना आवश्यक होता है। मानवीय संसाधनों के विकास का महत्वपूर्ण कार्य शिक्षा द्वारा ही संभव किया जाता है। मानवीय संसाधनों के विकास की दृष्टि से आधुनिक शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है, यह एक शक्तिशाली माध्यम है। आधुनिक कालीन शिक्षा प्रणाली के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत हैं:

- प्राचीन मर्यादाओं का सम्मान करते हुए नई मान्यताओं एवं विचारधाराओं के अग्रदूतों को तैयार करना।
- लोकतान्त्रिक आदर्शों की सुरक्षा करना तथा व्यक्ति एवं समाज में सामंजस्य स्थापित करना।
- सामाजिक कुरीतियों की मुक्ति में सहायता प्रदान करना।

- सत्य के परिपेक्ष्य में- नवीन ज्ञान की खोज करना, पुराने ज्ञान और पुराने विश्वासों की नयी आवश्यकताओं और खोजो के प्रकार में व्याख्या करना।
- व्यक्तियों में जन्मजात गुणों की खोज करना तथा प्रशिक्षण के माध्यम से उनका विकास करना।
- राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप जनशक्ति तथा जनता की सामाजिक आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए आधुनिक शिक्षा प्राणाली का प्रसार करना।
- भारत में ऐसी विभूतियों को तैयार करना जो राजनीतिक प्रशासन व्यवसाय, उद्योग एवं वाणिज्य आदि के क्षेत्रों में स्वस्थ प्रतिनधित्व कर सकें।

- **स्वरूप**

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज में शिक्षा सामाजिक नियंत्रण, व्यक्तित्व निर्माण तथा सामाजिक व आर्थिक प्रगति का मापदंड होती है। भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली ब्रिटिश प्रतिरूप पर आधारित है जिसे सन् 1835 ई. में लागू किया गया था। जिस तीव्र गति से भारत के सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक परिदृश्य में बदलाव आ रहा है उसे देखते हुए यह आवश्यक है कि हम देश की शिक्षा प्रणाली की पृष्ठभूमि उद्देश्य, चुनौतियों तथा संकट पर गहन अवलोकन करें।

सन् 1835 में जब वर्तमान शिक्षा प्रणाली की नींव रखी गई थी तब लार्ड मैकाले ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य भारत में प्रशासन के लिए बिचौलियों की भूमिका निभाने तथा सरकारी कार्य के लिए भारत के विशिष्ट लोगों को तैयार करना हैं। इसके फलस्वरूप एक सदी तक अंग्रेजी शिक्षा के प्रयोग में लाने के बाद भी 1935 में भारत की साक्षरता दस प्रतिशत के आंकड़े को भी पार नहीं कर पाई। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत की साक्षरता मात्र 13 प्रतिशत ही थी।

इस शिक्षा प्रणाली ने उच्च वर्गों को भारत के शेष समाज में पृथक रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लगभग पिछले दो सौ वर्षों की भारतीय शिक्षा प्रणाली के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह शिक्षा नगर और उच्च वर्ग केन्द्रित, श्रम तथा बौद्धिक कार्यों से रहित थी।

- **समस्याएँ**

आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने राष्ट्र को ऐसे घेरे में लाकर खड़ा कर दिया है जहां केवल पेट की पूर्ति दिखाई देती है। जीवन की सच्चाई का गला घोंटने वाली यह शिक्षा जिन्दगी जीने का नहीं अपितु, जिन्दगी रोने का पाठ पढ़ाती है। सिर पर उपाधियों का बोझ लिए हुए जीवन की सड़क पर चलता-चलता थक जाता है परन्तु उपाधियों की गढ़री उसे ठीक तरह से जीना नहीं सीखा पाती।

वाणी, कर्म और विचार की शुद्धि का पाना ही शिक्षा का परम लक्ष्य है, लेकिन आज शिक्षा भ्रष्ट हो चुकी है। विद्यार्थियों को शुद्ध विचार, चरित्र, नई चेतना, नई प्रेरणा तथा नया दृष्टिकोण प्रदान करना शिक्षा का मुख्य लक्ष्य होता है परन्तु आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने देश को अन्धकार में ले जाकर नाश के कगार पर खड़ा कर दिया है। शिक्षा का स्तर दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है इनके बीच तनाव ही तनाव देखने को मिलता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली से अनेक समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं।

- **नयी वैश्विक गुलामी**

आज से करीब 500 वर्ष पूर्व तक समस्त विश्व की प्रजा पारंपरिक रूप से चले आ रहे नीतिमय आधार पर सुखी जीवन जीती आ रही थी किन्तु कुछ एक स्वार्थी तत्वों द्वारा स्वाहित के लिए क्या योजनायें बनी तथा उसका कार्यान्वयन कैसे हो रहा है, किस चालाकी से समस्त विश्व को गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा जा रहा है।

पन्द्रहवीं शताब्दी के अंत समय में यूरोप के दो राष्ट्रों की सारे विश्व पर निर्लज्ज दादागिरी चल रही थी। यूरोप के बाहर नए-नए देश खोजना उनको लूटना उन पर शासन करना- यह सब इन दोनों देशों के बीच, स्पर्धा का विषय बन गया था। नए खोजे गए देशों के स्वामित्व के बारे में इन दोनों राष्ट्रों के बीच अक्सर विवाद और संघर्ष होते थे और ये विवाद ईसाई धर्मगुरु पोप के दरबार तक पहुँचे। इन विवादों का स्थायी हल लाने के लिए तत्कालीन पोप ने विश्व को दो भागों-पूर्व व पश्चिम में बाँट कर स्पेन और पुर्तगाल, को दे दिए और इस तरह समस्त विश्व पर स्वयं के सर्वोच्च स्वामित्व को स्थापित किया। विभाजन का यह दस्तावेज 1493 के **'बुल'** के रूप में जाना जाता है।

इस वैश्विक गुलामी का पहला उद्देश्य है- विश्व की चार पुरुषार्थ आधारित महा सुव्यवस्था के स्थान पर एक महा अन्यायी रचना अर्थात् शोषण व हिंसा के आधार पर रचित भौतिक व अनात्मवादी व्यवस्था की स्थापना। इसका प्रेरक बल चर्च संस्था है जिसकी अनके योजनाओं में से एक योजना है बहुमत के आधार पर ईसाई धर्म को विश्व धर्म बनाना। इस योजना की सफलता की शुरुआत के लिए ही सन् 1812 में शिकागो में पहली विश्व धर्म परिषद का आयोजन हुआ।

इस योजना का दूसरा उद्देश्य है- विश्व के किसी भी देश में ईसाई प्रजा के वंशज स्थायी रूप से बस सकें-सर्व सत्ताधीश के रूप में किसी भी देश के नागरिक बन सकें। इस उद्देश्य की सफलता के लिए स्थानिक मूल प्रजा की संस्कृति, धर्म, भाषा, व्यवसाय, शिक्षा प्रणाली खान-पान, रीति-रिवाजों में दखल कर, उन्हें क्षीण कर उनका नाश कर आधुनिकता का प्रवेश करवाना। अन्य उद्देश्य है- हिन्दू प्रजा की संस्कृति का ईसाई करण करना, मूल प्रजाओ के स्वतंत्र अस्तित्व व पहचान का नाश करना, समस्त विश्व में एक धर्म, एक धर्मगुरु, एक प्रजा, एक सेना, एक वेश-भूषा एक आर्थिक ढांचा, एक भाषा इत्यादि के द्वारा ईसाई धर्म और राजसत्ता को स्थापित करना।

- **विकास के खण्डहर**

"विकास" नामक शब्द आजकल एक वेदवाक्य समान बन गया है। इस शब्द के सामने एक लब्ज भी बोलने की हिम्मत कोई नहीं करता। आज के युग में वह एक पवित्र गाय है, उसकी निंदा या अपमान असत्य माना जाता है परन्तु विकास के बारे में ऐसी मजबूत सोच के सामने विरोध का सुर निकालने वाले कुछ विचारकों में से एक बर्लिन युनीवर्सिटी में कार्यरत जर्मन विचारक वूल्फगेंग झेक्स हैं उन्होंने अमेरिका की पेन्सील्वेनिया यूनीवर्सिटी में मुलाकाती प्राध्यापक के तौर पर काम किया हुआ है। "डेवलपमेन्ट डिक्शनरी" नामक पुस्तक को भी उन्होनें सम्पादित किया है। उन्होनें बताया कि विकास के विषय में केवल थोड़े हरे रंग के चित्र बनाने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा इस विषय में बाह्य साज-सज्जा से काम नहीं चलेगा परन्तु विकास के बारे में हमारा सम्पूर्ण मानस-परिवर्तन अनिवार्य है।

लगभग पच्चीस-पचास वर्ष पहले यह प्रश्न पूछा जाता था कि मनुष्य को सुख-चैन से जीने के लिए क्या चाहिए? तो इसका सीधा-सादा उत्तर मिलता था कि रोटी, कपड़ा और मकान। लेकिन, आज के दौर में इस प्रश्न का उत्तर बदल चुका है। अब मनुष्य का गुजारा रोटी, कपड़ा और मकान से नहीं होता है, अब उसे जीने के लिए कार, मोबाइल, एयरकंडीशनर, टेलीविजन, वॉशिंग-मशीन, फ्रिज, ओवन, कम्प्यूटर और इन्टरनेट आदि भी चाहिए। जनरेशन अब उम्र से नही बल्कि टेक्नोलोजी से बदली है। थ्री-जी और फोर-जी से इन्टरनेट की स्पीड फास्ट, फास्टर से फास्टेस्ट तक पहुंच गई है और इसी से स्पीड मापी जाती है। सब-कुछ फटाफट होना चाहिए पूरी दुनिया ही जैसे मोबाइल में समा गई है कोई भी काम हो तो एक ही बात, मोबाइल है न ! व्यक्ति जब चाहे तब, घडी के छठवें भाग में दुनिया के किसी भी कोने में मौजूद व्यक्ति से वीडियो-टॉक कर सकता है दुनिया छोटी से छोटी होती जा रही है पूरा ग्लोबल जैसे एक गांव बन गया है। क्या यही विकास है तो फिर हमने विकास ही क्या किया? व्यक्ति, व्यक्ति से दूर होता जा रहा है मानस-विशेषज्ञों के लिए यह चिन्ता का कारण बनता जा रहा है।

विश्व के पास आज सबसे श्रेष्ठ रास्ता भारत के प्राचीन वैदिक समाजवाद का ही है। हमारी अर्थव्यवस्था ही हमारी संस्कृति थी जिसमें सिद्धान्त था कि "जितनी चादर हो उतने ही पैर पसारने चाहिए" अर्थात कर्ज नही लेना चाहिए। कम से कम 20 प्रतिशत बचत करें और गरीबों और दान के लिए 10 प्रतिशत रकम खर्च करनी चाहिए भारत दुखी हुआ है तो इसका कारण भी यही है कि हमने अपने मूल्यों की अनदेखी की और आधुनिकता का अंधानुकरण किया। हमें और पूरी दुनिया को अन्ततः अपने मार्ग पर ही लौटना पडेगा ऐसी स्थिति उत्पन्न हो चुकी है और आज नही तो कल हमें अपना ही पुराना लेकिन सच्चा मार्ग अपनाना ही पडेगा।

- **भारतीय शिक्षा का सर्वनाश**

शिक्षा एक व्यक्ति से लेकर समग्र देश के विकास के लिए अत्यन्त उपयोगी साधन है, शिक्षा के लिए अरबों रूपये खर्च होते हैं, माता-पिता अपने बच्चों की शिक्षा के लिए दिन-रात एक कर देते है, तो भी आज शिक्षा सभी के लिए एक बड़ा सिरदर्द बनकर रह गई है। छात्र त्रस्त है, माता-पिता चिन्ता ग्रस्त है, शिक्षक दिशाहीन है, संचालक उसे सरलता से लाभ दिलानेवाला व्यवसाय समझते है, शासन उलझा हुआ है।

इसका कारण यह है कि शिक्षा की वर्तमान समस्या के मूल में जाकर उसके कारण जाने बिना ही समस्या के निराकरण के उपाय किऐ जा रहे हैं। शिक्षा की गाड़ी जो एक बार पटरी से उतर गई है वह पुनः पटरी पर चढ़ नहीं रही है।

विगत दो सौ वर्षों से शिक्षा का गाड़ी पटरी से उतर गई है। केवल उतर ही नहीं गई है, गलत पटरी पर चढ़ गई है। उसे सही पटरी पर चढाने के लिए प्रथम तो यह जानने की आवश्यकता है कि समृद्ध शिक्षा परंपरा को ध्वस्त कर देने वाली घटना घटी कैसे?

इतिहास में हम अंग्रेजों के शासन के विषय में पढ़ते हैं। हमारी गुलामी, गुलामी से मुक्त होने हेतु किए गए आन्दोलन, अंग्रेजों द्वारा किए गए अत्याचार आदि के सम्बन्ध में भी पढ़ते हैं, परन्तु यह सब कुछ वास्तविकता की तुलना में बहुत अल्प है। अंग्रेजों ने जो विनाश ढाया है वह हमें जो ज्ञात है उससे कई गुना अधिक है, अधिक मात्रा में है, अधिक भयंकर है, अधिक व्यापक है और अधिक गहरा है। उन्होनें भारतीय शिक्षा का सर्वनाश ही कर दिया है।

1.1.6 भारतीयता के सम्बन्ध में विभिन्न शिक्षा आयोगों के सुझाव

❖ **कोठारी आयोग (1964-66)**

- 25 प्रतिशत माध्यमिक स्कूलों को व्यावसायिक स्कूल में परिवर्तित किया जाए।
- उच्च शिक्षा में तीन या उससे अधिक वर्ष का स्नातक पाठ्यक्रम हो और उसके बाद विविध अवधि के पाठ्यक्रम हों।
- शिक्षक की आर्थिक, सामाजिक व व्यावसायिक स्थिति सुधारने की सिफारिश की।

❖ **हण्टर आयोग (1882)**

लार्ड रिपन ने भारतीय शिक्षा के विषय में एक कमीशन गठित किया जिसे "भारतीय शिक्षा आयोग" कहा गया। इनके अनुसार देशी पाठशालायें राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर सकती हैं। तथा उच्च तथा निम्न सभी प्रकार के देशी विद्यालयों को सरकार प्रोत्साहन दें।

❖ **राधाकृष्णन आयोग (1948-49)**

राधाकृष्णन आयोग को विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग भी कहते हैं। इस आयोग ने विश्वविद्यालय शिक्षा के सभी अंगों के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत किए और उनमें सुधार के लिए ठोस सुझाव दिए।

इस आयोग ने उच्च शिक्षा के विभिन्न पक्षों जैसे- उच्च शिक्षा के उद्देश्य, अध्यापकों की सेवाशर्तों, शिक्षा के स्तर, पाठ्यक्रम, व्यावसायिक शिक्षा, परीक्षा प्रणाली, छात्र कल्याण, अर्थव्यवस्था आदि के संबंध में अनेक बहुमूल्य सुझाव दिए।

1.1.7 समाज सुधारकों के शैक्षिक प्रयास

❖ **स्वामी विवेकानन्द**

स्वामी जी सामाजिक परिवर्तन की गति को तीव्र कर भारत में व्यापक बदलाव लाना चाहते थे। इसमें वे शरीर, मस्तिष्क और आत्मा तीनों की भूमिका पर विचार करते हैं किन्तु उन्हें सबसे ज्यादा भरोसा 'आत्मा' पर ही है, जो उनकी क्रान्ति-दृष्टि को दृढ़ भारतीय जमीन देती है। यह विश्व में अन्यत्र सम्भव नहीं है। स्वामी जी कहते हैं- 'इसमें कोई शक नहीं कि शारीरिक शक्ति द्वारा अनेक महान कार्य सम्पन्न होते हैं और इसी प्रकार मस्तिष्क की अभिव्यक्ति भी अद्भुत है, जिससे विज्ञान के सहारे तरह-तरह के यंत्रों तथा मशीनों का निर्माण होता है।

स्वामी जी ने भारत के सम्पूर्ण परिवर्तन के लिए किसी एक वर्ण या समुदाय के परिवर्तन को पर्याप्त नहीं माना है। जब तक सभी इस दिशा में तत्पर नहीं रहेंगे, तब तक यह बदलाव पूरा नहीं होगा। इसलिए वे सभी को विचारवान बनाना चाहते हैं वहीं आचरण की शुद्धता पर भी बल देते हैं।

❖ **डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन**

देश के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने भारतीय शिक्षा जगत को नई दिशा दी। उनका जन्मदिन देश शिक्षक दिवस के रूप में मनाता है। वह निष्काम कर्मयोगी, करुणा हृदयी, धैर्यवान, विवेकशील विनम्र थे। उनका आदर्श जीवन भारतीयों के लिए ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रेरणास्त्रोत है।

एक बार डॉ० राधाकृष्णन के जन्मदिन के शुभ अवसर पर उनके छात्रों एवं दोस्तों ने उनसे जन्मदिन का जश्न मनाने की अनुमति मांगी, लेकिन जवाब में उन्होने कहा कि मेरे जन्मदिन का जश्न मनाने के बजाय अगर 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है तो यह मेरे लिए सौभाग्य की बात होगी। उनका मानना था कि समाज और देश की विभिन्न बुराइयों को शिक्षा के द्वारा ही सही तरीके से हल किया जा सकता है।

राधाकृष्णन जी ने शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु कई प्रयास किए और शिक्षकों, छात्रों और शिक्षा पद्धति के बीच एक मजबूत सम्बन्ध विकसित किया। कुल मिलाकर उन्होने पूरी शिक्षा प्रणाली को ही बदल डाला। उनके अनुसार शिक्षकों को विद्यार्थियों का स्नेह और सम्मान प्राप्त करने के लिए आदेश नहीं देना चाहिए बल्कि उन्हें इसके योग्य बनाना चाहिए।

❖ **रवीन्द्रनाथ टैगोर**

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के समय में भारतीय शिक्षा का स्वरूप अपने पूर्वकालिक शिक्षा के सदृश थी। जिस प्रकार से प्राचीन काल में शास्त्रीय शिक्षा के विकास पर विशेष बल दिया जाता था ठीक उसी प्रकार से आधुनिक शिक्षा के विकास में भी योगदान दिया गया है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर आधुनिक युग के महान दार्शनिक एक शिक्षाशास्त्री थे। अपने मौलिक एवं नये विचारों के द्वारा भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अपनी भारतीय संस्कृति के आधार पर भारतीय शिक्षा की नींव डाली। इन्होंने अपने संदेश में शिक्षा को प्राकृतिक वातावरण में दिए जाने पर बल दिया अतः ये प्रकृतिवादी शिक्षा के पक्षधर थे। टैगोर ने समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने के लिए एक ऐसी शिक्षा की संकल्पना की जो मानव का पूर्ण एवं सन्तुलित विकास करें, जिसमें समाज एवं राष्ट्र दोनों की प्रगति हो, जिसके लिए उन्होने अपने समय की क्रमबद्ध तथा निष्क्रिय शिक्षा का विरोध किया और बताया कि सभी शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह बालक को जीवन तक विश्व के स्वर के मिलन से पूर्णतया अवगत कराये तथा दोनों के मेल के मध्य संतुलन स्थापित करें।

❖ **महर्षि दयानंद सरस्वती**

स्वामी दयानंद सरस्वती एक महान भारतीय विचारक और समाज सुधारक थे, जिन्होंने भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का प्रयास किया। उन्होंने वेदों को ज्ञान का सर्वोच्च स्रोत माना और शिक्षा को व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का माध्यम बताया। उन्होंने धार्मिक और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई और शिक्षा को समाज सुधार का एक महत्वपूर्ण माध्यम माना। स्वामी दयानंद सरस्वती जी के विचारों ने प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में एक नई दिशा दी। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं बल्कि चरित्र निर्माण और समाज सुधार का भी एक महत्वपूर्ण माध्यम माना। आर्य समाज द्वारा स्थापित विद्यालयों ने प्राथमिक शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महर्षि दयानंद सरस्वती जी के विचारों को भावी पीढ़ी तक पहुंचाने का काम लाला हंसराज जी ने दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज (DAV) की स्थापना करके किया।

स्वामी दयानंद सरस्वती जी के विचारों ने प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में एक नई दिशा दी। उन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं बल्कि चरित्र निर्माण और समाज सुधार का भी एक महत्वपूर्ण माध्यम माना। आर्य समाज द्वारा स्थापित विद्यालयों ने प्राथमिक शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

हम सभी जानते हैं कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने राष्ट्र को ऐसे घेरे में लाकर खड़ा कर दिया है जहां केवल पेट की पूर्ति दिखाई देती है। इस शिक्षा प्रणाली ने देश को अंधकार में ले जाकर नाश के कगार पर खड़ा कर दिया है। शिक्षा का स्तर दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है इनके बीच तनाव ही तनाव देखने को मिलता है। ऐसे में भारत के हित और उत्कर्ष के लिए सबसे जरूरी है कि देश भर में प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली अपनाई जाए और इस अंग्रेजी-मैकाले-शिक्षा प्रणाली का बहिष्कार हो। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू हो गई है जिसमें भारतीयता एवं सांस्कृतिक मूल्यों पर ध्यान दिया गया है जिसमें भारतीयता एवं सांस्कृतिक मूल्यों पर ध्यान दिया गया है किंतु उसका प्रभाव उच्च शिक्षा पर ही विशेषरूप से देखने कोमिलता है। स्कूली शिक्षा अभी भी पुराने ढर्रे पर चल रही है। स्कूली शिक्षा में प्राइवेट, कॉन्वेंट (मिशनरी) स्कूलों का वर्चस्व दिखाई देता है। जिनमें मैकाले शिक्षा पद्धति ही प्रमुख है यह विद्यार्थियों को भारतीय मूल्यों से दूर कर पाश्चातीकरण के अंधकूप की ओर ढकेल रही है।मैकाले ने कहा भी था- "अंग्रेजों को भारतियों का एक ऐसा वर्ग विकसित करना चहिये जो स्वाद, विचारों, नैतिकता और बुद्धि से अंग्रेज हों।" उनका मनना था कि भारत पर प्रभावी शासन करने के लिए अंग्रेजों को मौजूदा भारतीय सामजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं को कमजोर करना चाहिए। उन्होंने यह कार्य अपनी नई शिक्षा प्रणाली के माध्यम से की है और वह इसमें बहुत अंशों तक सफल भी रहे। महात्मा हंसराज ने इसको अनुभूत किया और शिक्षा में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के समावेश से युक्त दयानंद एंग्लो वैदिक (DAV) स्कूल की स्थपना करी। जिसकी आज देश ही नहीं विदेशों में भी अनेकों शाखाएं हैं। शोधार्थी का गृह जनपद बाँदा है जिसकी सीमा से स्पर्श करता हुआ फतेहपुर जनपद है। शिक्षा परास्नातक में अध्ययन के दौरान वरिष्ठ सहपाठी के माध्यम से व्हाट्सअप पर DAV किड्स केयर, फतेहपुर के विषय में एक प्रेरणादायक वीडिओ प्राप्त हुआ। शोधार्थी पहले से ही महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों से अत्यधिक प्रभावित था। ऐसे में DAV किड्स केयर के विषय में जानकर शोधार्थी को अत्यंत प्रसन्नता हुयी और उसने इस विद्यालय को अपने लघु शोध का विषय बनाने का निश्चय किया ताकि इस विद्यालय की अच्छाइयों को सबके सामने लाया जा सके और समाज इससे प्रेरणा प्राप्त कर अधिकाधिक लाभान्वित हो सके।

1.3 समस्या कथन:

"शिक्षा में अभिनव प्रयोग: डीएवी किड्स केयर"

1.4 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

1.4.1 शिक्षा

- **महात्मा गांधी -** "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।"

- **स्वामी विवेकानन्द -** "मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।"
- **जॉन ड्यूवी -** "शिक्षा व्यक्ति की उन सभी भीतरी शक्तियों का विकास है जिससे वह अपने वातावरण पर नियंत्रण रखकर अपने उत्तरदायित्त्वों का निर्वाह कर सके।"

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षा से तात्पर्य सर्वांगीण विकास की औपचारिक पद्धति से है जिसे स्कूलों के माध्यम से संपन्न किया जाता है।

1.4.2 अभिनव प्रयोग

शब्दकोश के अनुसार अभिनव का अर्थ है- बिलकुल नया अथवा आधुनिक ढंग का।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में अभिनव प्रयोग से तात्पर्य शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे अनूठे/नवीन/विलक्षण प्रयासों से है।

1.4.3 डीएवी किड्स केयर

यह भारत का एक प्रसिद्ध प्री स्कूल है जो उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले में आर्य भवन में स्थित है। इसकी रेलवे स्टेशन से दूरी 7 किलोमीटर तथा बस स्टैण्ड से दूरी 200 मीटर है। यहाँ विविध प्रकार की जीवनोपयोगी कलाओं एवं प्रवृत्तियों का अभ्यास साथ ही साथ विविध प्रकार के प्रशिक्षण द्वारा मानसिक एवं शारीरिक संतुलन, निडरता एवं एकाग्रता आदि गुणों का विकास हो, ऐसी क्रियाओं का अभ्यास कराया जाता है इसलिए इस पाठशाला को विद्या, कला एवं कौशल का त्रिवेणी संगम भी कहा जाता है।

1.5 अध्ययन के उद्देश्य

जीवन के सभी कार्यों का सोद्देश्य होता है क्योंकि उद्देश्य के आभाव में जीवन दिशाहीन हो जाता है। किसी भी कार्य की सफलता उसके निर्धारित किए गए उद्देश्यों पर निर्भर करती है। उद्देश्यों और लक्ष्यों का निर्धारण ही कार्य को प्रगति प्रदान करता है। उद्देश्यों की स्पष्टता अध्ययन को सरल और सफल बना देती है। इसीलिए प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने कुछ उद्देश्य निर्धारित किए हैं ताकि शोधकर्ता को सही दिशा मिल सके। प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्न हैं-

- **"डीएवी किड्स केयर"** का निम्न के संदर्भ में अध्ययन करना-
  - संस्थापक परिचय एवं दर्शन
  - परिचयात्मक विवरण
  - विशेषताएँ
  - विभिन्न प्रशिक्षण आयाम
  - उपलब्धियाँ

- ❖ डीएवी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
- ❖ अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिह्नित करना।
- ❖ अध्ययन के आधार पर शैक्षिक उन्नयन एवं नवाचार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

1.6 अध्ययन विधि

अनुसंधान विधि, क्रिया को परिचालित करने का एक ढंग है, जो समस्या की प्रकृति द्वारा निर्धारित होती है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के अंतर्गत वैयक्तिक अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया है-

वर्णनात्मक अनुसंधान- इस प्रकार के शोध के अंतर्गत अध्ययन के समय जो परिस्थितियाँ हैं उनका उसी रूप में शोधार्थी द्वारा प्रस्तुतिकरण किया जाता है। इसमें तथ्यों का संकलन महत्वपूर्ण होता है।

वैयक्तिक अध्ययन विधि- यह एक ऐसी विधि है जिसमें किसी सामाजिक इकाई के जीवन की घटनाओं का अन्वेषण तथा विश्लेषण किया जाता है। सामाजिक इकाई के रूप में किसी एक व्यक्ति, एक परिवार, एक संस्था, एक समुदाय आदि के बारे में अध्ययन किया जा सकता है।

1.7 अध्ययन का परिसीमांकन

प्रत्येक शोध की एक सीमा होती है,उसी सीमा तक उसके निष्कर्ष वैध होते हैं। प्रस्तुत शोध की निम्न सीमांकन है-

- प्रस्तुत शोध डीएवी किड्स केयर, फतेहपुर के शैक्षिक दर्शन एवं शैक्षिक योगदान के अध्ययन तक सीमित है।

1.8 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने राष्ट्र को ऐसे घेरे में लाकर खड़ा कर दिया है जहां शिक्षा जिन्दगी जीने का नही अपितु रोने का पाठ पढाती है। इससे बचने के लिए भारतीय शिक्षा प्राणाली के पुनः उदय की आवश्यकता पड़ी है। ध्वस्त हुई प्राचीन शिक्षा प्रणाली को पुनः जीवित किए बिना भारतीय प्रजा एवं संस्कृति का समुद्धार असंभव है। तभी मैकाले शिक्षा के दुष्प्रभाव से हमारी आज जो दुर्दशा हुई है, उससे हम भारत को बचा पाएंगे। डीएवी किड्स केयर का उद्देश्य, डीएवी शिक्षा प्रणाली को, देश की मुख्य-धारा की शिक्षा बनाने का है। भारत की महान ऋषि संस्कृति से निःसृत शिक्षा-पद्धति के कारण ही हमारा राष्ट्र कभी जगतगुरु हुआ करता था और आगे भी भारत उस प्रतिष्ठा को तभी प्राप्त करेगा जब वही शिक्षा पद्धति देश भर में पुनःस्थापित होगी। डीएवी शिक्षा प्रणाली के द्वारा इन उद्देश्यों की पूर्ति हो सकती है। प्रायः लुप्त हो रही प्राचीन शिक्षा प्रणाली, ज्ञानपीठों तथा विद्याधामों को पुनर्जीवित करके तेजस्वी सूर्योदय की लालिमा से दिव्य ज्ञान की सुनहरी किरणों को चारोंओर फैलाकर राष्ट्र को ज्ञानदाता भारत बनाने का स्वप्न अब साकार होता दिखाई दे रहा है। डीएवी शिक्षा प्रणाली के क्या लाभ है, आदि का अध्ययन करना ही इस शोध का लक्ष्य है।

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का संर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान-कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। अतीत, वर्तमान तथा भविष्य की दिशा निर्धारण का माध्यम है। अतीत के कृत्य भावी अध्ययन के लिए दिशा-निर्देशन का कार्य करते हैं। अनुभव विगत तथा वर्तमान कार्य की प्रकृति तथा प्रक्रिया की स्पष्टता को विकसित करने में सहायक होते हैं।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। नव अनुसंधान की महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है। नव अनुसंधानकर्ता को इसके महत्त्व को समझना चाहिए।

गुड बार स्केट्स के अनुसार "योग्य चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे, इसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र के लिए भी उस क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोज से परिचित होना आवश्यक है।"

स्कॉट एवं वदींमर- "सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा से घिसी-पिटी समस्याओं पर अनुसंधानकर्ता को व्यर्थ श्रम से मुक्ति मिल जाती है और उसे नई समस्याओं के समाधान हेतु इससे सहायता मिलती है।"

2.1.1 सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण का औचित्य

केवल संदर्भ ग्रंथों की जानकारी प्राप्त कर लेना ही नहीं होता, सामग्री एवं सूचना के स्त्रोतों का ज्ञान प्राप्त करना तो अनुसंधान कार्य शृंखाला की एक कड़ी है। मुख्य कार्य तो अपने अनुसंधान से सम्बन्धित सूचनाओं एवं सन्दर्भो को एकत्र करना होता है। इन स्त्रोत ग्रंथो, पत्र-पत्रिकाओं आदि की कहाँ कितनी सूचनाएँ अपने अनुसंधान में उपयोगी है उन्हें निकालकर एकत्र करना तथा अनुसंधान प्रतिवेदन में यथा स्थान उनका प्रयोग करना सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण का वास्तविक औचित्य होता है, जो निम्न बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है-

1. चयनित पत्र-पत्रिकाओं एवं अन्य संबंधित ग्रंथों का अध्ययन।
2. महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक अंशों, विचार-बिंदुओं एवं अन्य उपयोगी सामग्री का संक्षेप में अभिलेखन।

3. अंत में समस्त अभिलिखित सामग्री का शोध-प्रबन्ध अथवा प्रतिवेदन में प्रयोग।

2.1.2 सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण का कार्य

शोधकर्ता के लिए शोध समस्या से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना तथा उसमें निहित विभिन्न सिद्धांतों एवं धारणाओं को समझने में सहायता प्रदान करना है, जो निम्न बिन्दुओं में स्पष्ट है-

1. सम्बन्धित क्षेत्र में जो व्यक्ति कार्यरत है उसके समझ उत्पन्न होने वाली समस्याओं का पता लगाना।
2. यह अनुसंधान कार्य के लिए आवश्यक सैद्धांतिक पृष्ठभूमि तैयार करता है और प्रत्येक प्रत्यय और धारणा को स्पष्ट करता है।
3. वर्तमान में और पिछले कुछ वर्षों में किन समस्याओं पर अनुसंधान किया गया है, ज्ञात करना।
4. अनुसंधान के लिए अपनाई जाने वाली विधि, प्रस्तुत उपकरण, आँकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रयोग में आने वाली, उपयुक्त विधियों को स्पष्ट करता है।
5. अनुसंधान कार्य के किस सीमा तक सरल व उपयोगी बनाया जा सकता है, इसका ज्ञान कराता है।
6. इसका मुख्य कार्य समस्या के सीमांकन और परिकल्पना निर्माण में सहायता करना है।
7. सम्बन्धित क्षेत्र में अनुसंधान किये जाने के मार्ग में आने वाली प्रमुख कठिनाइयों का पता लगाना।

2.2 अध्ययन से सम्बन्धित शोध-अध्ययन

(1) **देवी प्रतिमा (1996)** ने उपनिषद काल में मानवता की शिक्षा पर शोध कार्य किया। जिसके प्रमुख उद्देश्य उपनिषद कालीन मानव जाति था, जिससे आदर्श शैक्षिक सिद्धान्त तैयार किए जा सकें तथा भविष्य में शिक्षा में जागृति लायी जा सके इसके निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि वर्तमान व उपनिषद कालीन शिक्षा सिद्धान्तों को यदि तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो उपनिषद कालीन शैक्षिक सिद्धान्त बालक में आधारभूत गुणों का विकास करने में अधिक व बालक को उच्च जीवन व उच्च आदर्शों तक पहुँचाने में अधिक कारगार सिद्ध होता हैं।

(2) **लकी साहु (2012)** ने "वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में गुरु-शिष्य परम्परा की उपादेयता" के अध्ययन में पाया कि प्राचीन गुरु-शिष्य परम्परा की हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में अत्यन्त आवश्यकता है, क्योंकि एक छात्र के साथ-साथ जीवन कौशलों का संसर्ग मिले। आज के सामाजिक मूल्यों को देखते हुए यह भी आवश्यक है कि शिक्षक ऐसा हो जो समाज के लिए आदर्श हो तथा वह अपने शिष्यों को अपने व्यक्तित्व और ज्ञान से विकास के उच्च स्तर तक पहुँचे सके। जब हम यह मानते हैं कि छात्र के विकास के लिए सुदृढ़ छात्र-अध्यापक सम्बन्ध आवश्यक है तो हमें यह भी मानना होगा कि अध्यापक ऐसा हो जो समाज, अभिभावक व छात्र के लिए आदर्श हो।

(3) **श्रुति शर्मा (2013)** ने अपने अध्ययन "वैदिक जीवन दर्शन की वर्तमान सन्दर्भ में उपयोगिता" में पाया कि वैदिक जीवन का यह सिद्धान्त विश्व की संस्कृति में शायद ही कहीं प्रतीत हो। जीवन मानव का हो या पदार्थों का, वस्तुतः सिद्धान्त तो यही है कि जन्म के पश्चात मानव में जो 6 प्रकार के विचारक आते हैं, वे मानव जीवन की परिकल्पना के 6 आधारभूत स्तम्भ हैं, क्योंकि जीवन नाम ही विभिन्न प्रकार के परिवर्तनों का है और ये सब परिवर्तन विद्वान व धार्मिक माता-पिता तथा आचार्यों के संसर्ग से बालक के विद्यार्थी जीवन में पिरो दिए जाते है। अतः जीवन शरीर का आवरण धारण करने से लेकर आत्म से अनात्म तत्व का निवारण करने की जो कला है, जीवन कहलाती है।

वैदिक जीवन दर्शन को आत्मसात करने से न केवल हमारा जीवन स्तर उच्च होगा, अपितु हमारे जीवन मूल्यों में वृद्धि होगी तथा वैदिक जीवन दर्शन से समाज की दशा और दिशा दोनों प्रभावित होगी। अतः यदि हमें समाज में नित्य हो रहे दुराचारों, बुराइयों तथा विभिन्न आड़म्बरों से मुक्ति पानी है तो वैदिक जीवन दर्शन को अपनाना ही होगा। तभी हम अपने जीवन के अनुरूप बना सकेंगे और वैदिक समाज का निर्माण कर सकेंगे।

(4) **प्रीती गुप्ता (2019)** ने शिक्षा में अभिनव प्रयोग:हेमचन्द्राचार्य संस्कृतपाठशाला पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन में इन्होनें पाया कि वर्तमान शिक्षा पद्धति में शुधर की आवश्यकता है। जिसके लिए प्राचीन सर्वांगीण शिक्षा पद्धति को अपनाना होगा और प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति का पुनःउदय करने के लिए हेमचन्द्राचार्य संस्कृतपाठशाला की तरह सभी विद्यालयों में शिक्षण पद्धति को अपनाया जाए।

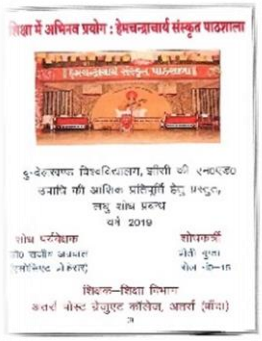

(5) **सुरेश कुमार द्विवेदी (2019)** ने रामकृष्ण मिशन का शैक्षिक योगदान का अध्ययन किया। इस शोध अध्ययन में इन्होनें पाया कि-

- सारे प्राणियों का अंतिम ध्येय मनुष्य का विकाश करना है।
- मन की एकाग्रता ही शिक्षा का सम्पूर्ण सार है।
- कार्य ध्येय की सिद्धि है और कारन साधन है।
- रामकृष्ण मिशन द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में देश-विदेश में अनेकों कार्य परिचालित किये जा रहे हैं। मिशन द्वारा शिक्षण संस्थानों की स्थापना प्रमुख रूप से ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में की गई है।

(6) **आनंद मोहन (2018) ने** शिक्षा में अभिनव प्रयोग:पूर्व माध्यमिक विद्यालय बरहेण्डा पर शोध कार्य किया।

इस अध्ययन में इन्होनें पाया कि-

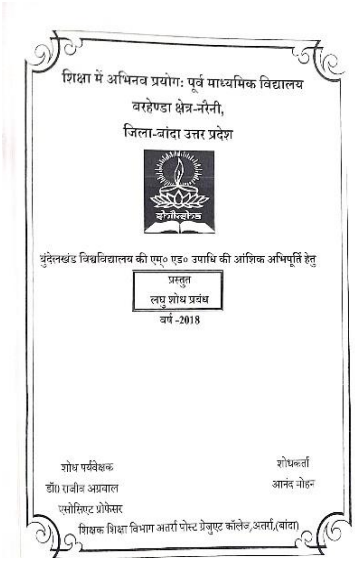
शिक्षा में अभिनव प्रयोग: पूर्व माध्यमिक विद्यालय
बरहेण्डा क्षेत्र-नरैनी,
जिला-बांदा उत्तर प्रदेश
बुंदेलखंड विश्वविद्यालय की एम० एड० उपाधि की आंशिक अभिपूर्ति हेतु
प्रस्तुत
लघु शोध प्रबंध
वर्ष -2018
शोध पर्यवेक्षक
डॉ0 राजीव अग्रवाल
एसोसिएट प्रोफेसर
शोधकर्ता
आनंद मोहन
शिक्षक शिक्षा विभाग अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज,अतर्रा,(बांदा)

- शिक्षा में अभिनव प्रयागों द्वारा शिक्षा प्रक्रिया को प्रभावी बनाया जा सकता है।
- शिक्षा में अभिनव प्रयागों द्वारा शिक्षा की नीरसता को दूर किया जा सकता है।
- जन सहयोग तथा मानव संसाधन के उचित प्रयोग द्वारा शिक्षा प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।
- शिक्षा में अभिनव प्रयागों द्वारा प्रक्रिया में अरुचि को दूर किया जा सकता है।

(7) राकेश कुमार सिंह (2021) ने वनवासी कल्याण आश्रम का शैक्षिक योगदान पर शोध कार्य किया। इस शोध अध्ययन में निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये।

- शिक्षा का उद्देश्य पढना नहीं ज्ञान एवं अनुभव को आत्मसात करना है।
- आज्ञापालन, अनुशासन, अतिथि सम्मान, दूसरों के भावनाओं का सम्मान, सहयोग सामाजिक उतरदायित्व का निर्वहन आदि गुण भी विद्यार्थियों में विकसित करने चाहिए।

(8) रेनू वाला अग्निहोत्री (2014) ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन में इन्होनें पाया कि-

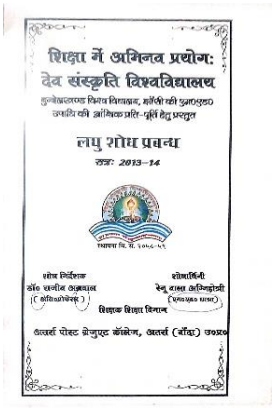
शिक्षा में अभिनव प्रयोग:
देव संस्कृति विश्वविद्यालय
लघु शोध प्रबन्ध
सत्र: 2013-14
शोधार्थी-ii
रेनू वाला अग्निहोत्री
शिक्षक शिक्षा विभाग
अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा) उ०प्र०

- देव संस्कृति विश्वविद्यालय में देश व धरती के लिए कुछ कर दिखाने वाले इंसानों को तैयार किया जाता है। ऐसे समर्थ व्यक्तित्व गढ़े जाते हैं, जो दूसरों का सहारा देखने की बजाय स्वयं तथा दूसरों का सहारा बन सकें। यहाँ प्रतिभाओं को तराशा व निखारा जाता है।
- पाठ्यक्रमों को रटाना, उपाधियाँ थमाना और जैसे-तैसे रोजगार की बैशाखी पकड़कर चलनें लायक बना देना, यहाँ का मकसद नहीं है

(9) अमित कुमार (2020) ने बाँदा जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय: एक अध्ययन पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन में निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए-

- प्राथमिक विद्यालय का औसतन क्षेत्रफल बहुत कम है। विद्यालय में क्षेत्र कम होने के कारन वृक्षारोपण कम किया जाता है।
- परिषदीय विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र में स्थित होने के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में अध्यापकों की कमी है।
- एक आदर्श परिषदीय विद्यालय के संचालन के लिए समुदाय का सहयोग बहुत जरूरी है।

2.3 निष्कर्ष: संबंधित साहित्य के अध्ययन के द्वारा शोध प्रबंध में उल्लेख किये गए, शोध में अनावश्यक पुनरावृत्ति नहीं होने पाती। संबंधित साहित्य शोध प्रबंध के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में शोधकर्ता के ज्ञान एवं कुशलता को स्पष्ट करता है। शोधकर्ता ने अध्ययन से संबंधित पूर्ववर्ती शोधों की समीक्षा की तथा पाया कि पूर्व में हेमचन्द्र संस्कृत पाठशाला, रामकृष्ण मिशन, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, वनवासी कल्याण आश्रम, पूर्व माध्यमिक विद्यालय बरहेंण्डा तथा बाँदा के परिषदीय अनुकरणीय विद्यालयों में शिक्षा के आधुनिकरण पर विस्तार से अध्यन किया गया है परन्तु बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक सबसे महत्त्व पूर्ण नैतिक मूल्यों की चर्चा नहीं किया गया।

तृतीय अध्याय

संस्थापक का संक्षिप्त परिचय एवं दर्शन

3.1 गीतांजली सिंह का जन्म एवं शिक्षा

गीतांजली सिंह एक ऐसे व्यक्तित्व का नाम है जिन्होंने देश की गिरती शिक्षा व्यवस्था व ख़राब होती गुणवत्ता के मध्य बेहतर शिक्षा व्यवस्था जो की तकनीक और वैदिक परम्परा अनुसार है उसमे महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनके द्वारा स्थापित (दयानंद एंग्लो वैदिक किड्स केयर) विद्यालय आधुनिक समय में देश और समाज के लिए शिक्षा व्यस्था किस प्रकार की होनी चाहिए इसका सर्वश्रेष्ठ उदहारण है।

गीतांजली जी का जन्म 21 जून को उत्तर प्रदेश के फ़तेहपुर जिले के एक सामान्य हिन्दू परिवार में हुआ है इनके पिता श्री राजा सिंह भदौरिया सरल व्यक्तित्व के, खुले विचारों वाले व्यक्ति हैं जो आधुनिक और वैदिक सांस्कृतिक परम्परा को संजोय स्वचालित विद्यालय (महर्षि दयानंद सरस्वती ज्ञान मंदिर, फतेहपुर) में प्रधानाचार्य थे। वही इनकी माता श्रीमती पुष्पलता सिंह कुशल गृहिणी व व्यक्तित्व से धार्मिक स्वाभाव की महिला हैं। जिसका प्रभाव गीतांजली जी के व्यक्तित्व व इनके कार्यों में स्पष्टतः देखने को मिलता है इनका व्यक्तित्व सौम्य एवं सात्विक है जिनमें धार्मिक व आध्यात्मिक मूल्यों का आविर्भाव उनके परिवार से ही हुआ है। इनकी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा इनके पिता के विद्यालय में रह कर ही पूर्ण हुई जिसके कारण प्रारंभ से ही इनके अंदर भारतीय संस्कृति के प्रति लगाव रहा है। गीतांजली जी बचपन से ही बहिर्मुखी स्वाभाव तथा बहुमुखी प्रतिभा के धनी होने के कारण वह विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रमों व पाठ्यसहगामी क्रियाओं में बढ़ चढ़ कर प्रतिभाग लिया साथ ही पढने में भी वह कुशाग्र बुद्धि की रही है। प्रारंभ से ही उन्हीने संगीत व नृत्य जैसी कलाओं में निपुणता हासिल कर विद्यालय प्रांगण में मधुर गायन व सांस्कृतिक नृत्य की प्रस्तुति करने से उनके भीतर प्रबल आत्मविश्वास का उद्भव हुआ।

वर्तमान समय में जहाँ भारतीय संस्कृति व शिक्षा का ह्रास होता जा रहा है भारत के लोगों में नैतिकता व चरित्र की कमी होने से शिक्षा, शिक्षा न होकर व्यापार बन गई है गुरु, गुरु न होकर व्यापारी बन गया है। इन्हीं कारणों से हमारी

वर्तमान पीढ़ी खोखली ,उद्देश्य हीन ,चरित्र हीन पथ भ्रष्ट होती जा रही है लोगों में नैतिकता की कमी हो गई है। लाभ की चाह में लोग शिक्षा की गुणवत्ता से समझौता कर समाज व राष्ट्र के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहे है। इन्हीं कमियों को ध्यान में रखते हुए समाज व राष्ट्र के हित के लिए गीतांजलि जी के द्वारा कमजोर और लड़खड़ाती हुई प्राथमिक शिक्षा के उत्थान के लिए **डीएवी किड्स केयर विद्यालय, फतेहपुर के रूप में** एक छोटा सा किन्तु कारगर प्रयास किया गया है। यह सम्पूर्ण राष्ट्र की शिक्षा को सुधारने के लिए पर्याप्त तो नहीं परन्तु यह अन्धेरे में उस दीपक के समान है जो उस अंधकार के प्रतिकार के लिए सदैव तत्पर रहता है और लोगों के मार्ग को प्रसस्त करता है। इनके द्वारा की गई यह छोटी सी कोशिश समाज के लिए वह ज्योति है जो एक दिन ज्वाला बनकर पूरे देश को अपने आभामय प्रकाश से जगमग कर देगी।

शिक्षा

गीतांजली सिंह की माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक शिक्षा फतेहपुर के सरकारी विद्यालय (राजकीय बालिका इन्टर कॉलेज, फतेहपुर) से पूर्ण हुई। यहाँ पर भी इन्होंने ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा का प्रदर्शन देते हुए सभी के भीतर अपनी एक गहरी छाप छोड़ी। इसके बाद वह आगे की शिक्षा (स्नातक) के लिए वह प्रयागराज विश्वविद्यालय के कला संकाय में अर्थशास्त्र, प्राचीन इतिहास, और अंग्रेजी साहित्य विषयों के साथ प्रवेश लिया।

WITH SUSHMA SWARAJ (INFORMATION AND BROADCASTING MINISTER) DURING REPUBLIC DAYPARADE OF NCC IN NEW DELHI

स्नातक के समय में अपने घर से दूर विभिन्न कठिनाइयों का सामना करते हुए छात्रावास में रहने का निश्चय किया और अपने आगे की शिक्षा जारी रखी। इसी दौरान की एक घटना का जिक्र करते हुए गीतांजली जी बताती है की जब उन्होंने राष्टीय कैडेट कोर (NCC) के कैडेटस् को परेड करते हुए उनके एकता और अनुशासन को देखा तो वह उनसे बहुत अधिक प्रभावित हुई और राष्टीय कैडेट कोर में शामिल होने का निश्चय किया। इस बात का पता जैसे ही उनके भाई को लगा तो वह बेहद नाराज हुए क्योंकि उस समय लड़कियों का सेना सम्बन्धी गतिविधिओं में सम्मलित होना हमारी दूषित हो चुकी भारतीय संस्कृति (तत्यपर्य पुरुष प्रधान संस्कृति से) अनुसार अच्छा नहीं माना जाता था। यथा उनके भाई द्वारा नाराजगी जाहिर करते हुए उनके ऊपर राष्टीय कैडेट कोर सेवा को छोड़ने के लिए कहा गया अन्यथा की स्थिति में उन्हें विश्वविद्यालय छोड़ने के लिए बाध्य होना पड़ेगा और इतना कह कर उन्हें वापस घर ले आये। घर आने के बाद अपने गीतांजली जी अपने टूटते सपनो और पीछे छुटते भविष्य के बारे में सोच कर वह पिता के सामने भावुक हो कर वीरांगना

लक्ष्मी बाई का उदाहरण देते हुए राष्ट्रीय कैडेट कोर में शामिल होने की प्रबल इच्छा जाहिर की और उसमे शामिल होने की अनुमति माँगी। पिता जी खुले विचारों वाले थे जिससे उन्होंने उनकी बातो को समझा और राष्ट्रीय कैडेट कोर में शामिल होने की अनुमति दे दी। राष्ट्रीय कैडेट कोर में शामिल होकर उन्होंने वहां भी अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया और विश्वविद्यालय की ओर से गणतंत्र दिवस की परेड में राष्ट्रीय कैडेट कोर की महिला प्रकोष्ठ की अगुवानी करते हुए C प्रमाणपत्र प्राप्त किया। इस उपलब्धि के लिए उन्हें सुषमा स्वराज जी (तात्कालिक सुचना एवं प्रसारण मंत्री) के द्वारा सम्मानित भी किया गया।

3.2 गीतांजली सिंह की उपलब्धियाँ

बेस्ट वूमन अचीवर (2019)– भारत की सबसे बड़ी ज्वैलर्स रिटेल चेन में से एक सेनेको गोल्ड एंड डायमंड ने हजरतगंज लखनऊ ने अपने 105वें स्टोर के लांचिंग के एक कार्यक्रम के दौरान अभिनेत्री विद्याबालन ने दस महिलाओं को बेस्ट वूमन अचीवर (2019) अवार्ड से सम्मानित किया। यह अवार्ड अलग-अलग क्षेत्रों में कार्य कर रहीं ऐसी दस महिलाओं को दिया गया है। जिन्होंने अपने दम पर संघर्षों का सामना करते हुए अपनी पहचान बनाई है।

डीएवी किड्स केयर की संस्थापक गीतांजली जी को यह अवार्ड मिला है।

मिसेज इंडिया क्वीन (2017)– गीतांजली सिंह को मिसेज इंडिया क्वीन (2017) के अवार्ड से भी नवाजा गया है।

अभिनेत्री विद्या बालन ने लखनऊ में गीतांजलि सिंह को किया सम्मानित

सांध्य हलचल ब्यूरो

फोहपुर। भारत की सबसे बड़ी ज्वैलर्स रिटेल चेन मे से एक सेनको गोल्ड एण्ड डायमण्ड ने हजरतगंत लखनऊ में अपने 105वें स्टोर लांचिंग के शानदार कार्यक्रम के दौरान सुपरस्टार अभिनेत्री विद्यावालन ने दस महिलाओं को बेस्ट वुमन अचीवर-2019 अवार्ड से सम्मानित किया। ये अवार्ड अलग-अलग क्षेत्रों में काम कर रही ऐसी महिलाओं को दिया गया। जिन्होने अपने दम पर संघर्षों का सामना करते हुये अपनी पहचान बनाई है।

डीएवी किड्स केयर चलाने वाली फोहपुर की गीतान्जलि सिंह को भी यह अवार्ड मिला है। अपनी इस सफलता पर वह बहुत खुश होने के साथ-साथ गौरवान्वित भी हैं। उन्होने अपनी इस सफलता का श्रेय अपनी लगन मेहनत और कभी असफलता से हार न मानने वाले अपने दृढ़ निश्चय को दिया। उन्होने कहा कि मैं जो ठान लेती हूं वो मैं पूरा कर के ही दम लेती हूं, भले ही राह में कितनी ही कठिनाइयां आयें। यही सोंच सफलता की एक नई इबारत अपने आप लिखती जाती हैं।

गीतांजलि को सम्मानित करती अभिनेत्री विद्या बालन

माँ बिमला नारी गौरव सम्मान (2021)

गीतांजली जी को यह सम्मान उनके सामाजिक कार्यों में सहभागिता के लिए दिया गया विभिन्न प्रकार के समाज में कार्यों के लिए वे हमेशा तत्पर रहती हैं।

3.3 गीतांजली सिंह के सामाजिक कार्य

महिलाएं सदियों से समाज के विकास में अहम भूमिका निभाती रही हैं। उन्होंने घर से लेकर समाज तक, हर जगह अपनी मौजूदगी और योगदान को साबित किया है। सामाजिक कार्य के क्षेत्र में भी महिलाओं का योगदान अतुलनीय है। वे समाज के विभिन्न वर्गों, खासकर महिलाओं, बच्चों और वंचित वर्गों के लिए अनेक प्रकार के सामाजिक कार्य करती हैं। इसी क्रम में गीतांजली जी का भी योगदान सराहनीय है।

- **शिक्षा के क्षेत्र में:** गीतांजली जी महिलाओं की शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वह ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देती हैं, महिलाओं को साक्षर बनाती हैं और उन्हें रोजगार के लिए प्रशिक्षित करती हैं।
- **स्वास्थ्य के क्षेत्र में:** महिलाएं स्वास्थ्य जागरूकता फैलाने, कुपोषण और बीमारियों से लड़ने में सक्रिय भूमिका निभाती हैं। वह गर्भवती महिलाओं और नवजात शिशुओं का ख्याल रखती हैं, टीकाकरण अभियानों में भाग लेती हैं और स्वास्थ्य केंद्रों में स्वयंसेवी के रूप में काम करती हैं।
- **समाज सेवा के रूप में:** गीतांजलीजी समाज सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रहती हैं। वे अनाथालयों, वृद्धाश्रमों और विकलांगों के लिए सेवा करती हैं। वे प्राकृतिक आपदाओं के दौरान राहत और बचाव कार्य में भी भाग लेती हैं।
- **लोक कल्याण के रूप में:** गरीबी उन्मूलन, महिला सशक्तिकरण, बाल विवाह रोकथाम और दहेज प्रथा जैसी सामाजिक समस्याओं से लड़ने में अग्रणी भूमिका निभाती हैं। वह स्वयं सहायता समूहों के साथ मिलकर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में मदद करती हैं।
- **राजनीति के क्षेत्र में:** गीतांजली जी राजनीति में भी सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। वे महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ती हैं और नीति निर्माण में योगदान देती हैं।

3.4 गीतांजली सिंह से साक्षात्कार

प्रश्न1.क्या आपके स्कूल के बालक / बालिका स्कूल के अनुशासन का अनुसरण करते हैं?

उत्तर. जी हाँ हमारे स्कूल में अध्यापकों की मदद से बच्चों में ये गुण विकसित करने के लिए रोचक प्रयोग किये जाते हैं जिससे बच्चों के अंदर अनुसाशन के गुण अपने आप विकसित होते है।

प्रश्न2. क्या आप के विद्यार्थी पाठ्य सहगामी क्रियाओं बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं?

उत्तर. जी हां हमारे यहां वार्षिक महोत्सव, गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, व अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिसमें हमारे बालक / बालिका बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। विद्यालय में प्रतिदिन स्केटिंग, कैलीग्राफी, अबेकस, रोबोटिक्स, म्यूजिक, की कक्षाएं चलती हैं। उसमें भी हमारे बच्चों का अच्छा प्रदर्शन रहता है। गर्मियों में समर कैंप और रचनात्मक वर्कशॉप का आयोजन भी होता है जिसमें बच्चे विभिन्न प्रकार की रचनात्मक वस्तुओं को बनाते हैं।

प्रश्न 3. क्या आप के संस्थान में कभी अभिभावकों को बुलाया जाता है?

उत्तर. जी हाँ, प्रत्येक शनिवार को अभिभावकों की मीटिंग बुलाई जाती है। इसमें बालक / बालिका से संबंधित जो भी समस्याएं होती हैं। अभिभावकों को अवगत कराया जाता है।

प्रश्न 4. क्या आप लोगों के द्वारा दी गई जिम्मेदारी का निर्वाहन बालक बालिका करते?

उत्तर. जी हाँ, हमारे विद्यार्थी विनम्रता पूर्वक तथा निष्पक्ष पूर्ण ढंग से दी गई जिम्मेदारी का निर्वहन करते।

प्रश्न 5. क्या विद्यार्थियों के व्यवहार पर आपके विद्यालय हिंदी का प्रभाव पड़ा है?

उत्तर. जी हाँ, हमारे स्कूल में NEP 2020 किये गए प्रावधानों के माध्यम से ही शिक्षा देने का प्रयास किया जाता है उसमे हिंदी के अलावा जो भी स्थानीय भाषाओं के बारे में उल्लेख किया गया है उन सभी का हम पालन करते हैं।

प्रश्न 6. अनुशासनहीनता को नियंत्रित करने के लिए क्या-क्या प्रयास किए जाते हैं?

उत्तर. अध्यापकों के शिक्षण पद्धति का प्रभाव होने के कारण उन में अनुशासनहीनता देखने को नहीं मिलती है। फिर भी कोई बच्चा अनुशासनहीनता करता है तो उसे दंड नहीं दिया जाता बल्कि महत्वपूर्ण विद्यालयी उत्तर दायित्व सौंप दिए जाते है।

प्रश्न 7. क्या कभी आप के विद्यार्थी बिना बताए स्कूल से बाहर घूमने - फिरने चले जाते हैं?

उत्तर. जी नहीं कोई भी बालक या बालिका बिना अनुमति के विद्यालय से बाहर नहीं जाते है।

प्रश्न 8. आपका विद्यालय समान विद्यालयों से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर. हमारे विद्यालय में मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए बच्चों को विभिन्न प्रकार के आसन, प्राणायाम, सुदर्शन क्रिया करवाई जाती है। अध्यात्मिक ज्ञान प्रदान किया जाता है। बच्चे प्रसन्न मय वह मुस्कान मय वातावरण में शिक्षा ग्रहण करते हैं। विद्यालय आधुनिक भौतिक संसाधनों से सुसज्जित है। यहां पाठ्य सहगामी क्रियाओं के रूप में स्केटिंग, रोबोटिक्स, कैलीग्राफी, म्यूजिक, विभिन्न प्रकार के खेल- कूद करवाया जाता है। छोटे बच्चों को देखरेख के लिए दीदियों को लगाया जाता है।

3.5 गीतांजली सिंह का शैक्षिक चिंतन

गीतांजली जी एक स्वालंबी महिला है। उन्हाने बहुत सारे सामाजिक कार्य किये है उन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वास, कुरीतियों और असमानता के खिलाफ आवाज उठाई और महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया। इनका का मानना है कि शिक्षा ही समाज को बदलने का सबसे शक्तिशाली हथियार है। इन्होंने सभी वर्गों, जातियों और लिंगों के लोगों को शिक्षित करने के लिए अथक प्रयास किए। उन्होंने विशेष रूप से महिलाओं और दलितों की शिक्षा पर जोर दिया। हमें महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए काम करना चाहिए और उन्हें समान अवसर प्रदान करने चाहिए। शिक्षा सिर्फ ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा प्रक्रिया है जो व्यक्ति को समाज में एक सफल और योगदान देने वाला सदस्य बनाती है। शैक्षिक चिंतन इस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह एक ऐसी मानसिक क्रिया है जिसमें हम शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर विचार करते हैं, उनका विश्लेषण करते हैं और नए विचारों को जन्म देते हैं। शैक्षिक चिंतन की शुरुआत जिज्ञासा से होती है। जब हम किसी विषय के बारे में जानने के लिए उत्सुक होते हैं, तो हम उसके बारे में सोचना शुरू करते हैं।

3.6 गीतांजली सिंह का समाज के लिए सन्देश

आज की शिक्षा अर्थहीन होती जा रही है। लोग पश्चिम की ओर भाग रहे है। जिसे विकास मान रहे हैं वही मनुष्य जीवन के लिए खतरा बन गया हैं, क्योंकि आज के दौर में पक्की-सड़कों, उद्योंगो, मकानों और सुख-सुविधाओं को विकास माना जाता है, वास्तव में तो यही हमारे पतन की निशानियां हैं। उद्योगों का शुरु होना विकास कहा जाता है, परन्तु उद्योगों से फैलने वाले प्रदूषण ने ही अनेक प्रकार के नुकसान पहुचायें है, जबकि दूसरी ओर जहां अभी पक्की सड़के नही बनी है, उद्योग स्थापित नही हुए है, वहां जाकर देखो तो पता चलेगा कि वहाँ के लोग कितने स्वस्थ और

सुखी है, वहाँ कोई रोग नही होता है। भारत फिर से विश्वगुरु बनेगा ऐसी संकल्पना मन में लेकर गीतांजली जी सामाज को नई दिशा में लेकर चलने के लिए अग्रसर हैं। सदियों पहले चलने वाली नालंदा जैसी विद्यापीठें ही सही अर्थ में विश्वविद्यालय थी। इन विद्यापीठों मे अध्ययन करने के लिए अन्य देशों से भी विद्यार्थी आते थे और अध्ययन पूर्ण करने के बाद वह विद्यार्थी हिम्मत से जीवन में आने वाली कठिनाइयों का सामना करते थे। आजकल डिग्री प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी लाचार और निराश हो जाता है। शिक्षा व्यवसाय का माध्यम बन गया है न कि ज्ञान की आधार शिला यही कारण है जो आज शिक्षा की यह दुर्दशा हुई है।

मूर्ख और गुलाम बनाने वाली अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का बहिष्कार हो- आज अपने देश में व्याप्त सभी प्रकार की समस्याओं का मूल कारण यहाँ की वर्तमान शिक्षा-प्रणाली है। इस अंग्रेजी- मैकाले शिक्षा प्रणाली का ईजाद अंग्रेजों ने अपने औपनिवेशिक साम्राज्य को दीर्घकालिक बनाने के लिए अपने हित में किया था। शिक्षा की इस वर्तमान प्रणाली से भारत का भला हो ही नहीं सकता। वर्तमान शिक्षा प्रणाली से लोगो को व्यवसायी बनाया जा रहा है विद्वान नहीं शिक्षा का मूल उद्देश्य ही लोगो को पता नहीं है। यह शिक्षा-प्रणाली भारत के लोंगो को परिवार-द्रोही, राष्ट्र-दोही बनाने वाली है। आज हमारे देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, अनाचार, बलात्कार, चोरी-बेईमानी, रिश्वतखोरी से लेकर पारिवारिक विघटन और सामाजिक-वैचारिक प्रदूषण तक सभी तरह की वर्जनाएँ इसी शिक्षा-प्रणाली की देन है। ऐसी अवांद्दित-अनुचित शिक्षा-प्रणाली को भारत से हटाये बिना, यह देश किसी भी हालत में सुखी-समृद्ध व विकसित हो ही नही सकता है क्योंकि इस प्रणाली की सम्पूर्ण रचना ही भारत के विरुद्ध अंग्रेजों के हित के हिसाब से बनी हुयी है। इस शिक्षा का हर डिग्री के साथ अंग्रेजी सोच और भारत-विरोधी पश्चिमी धारणा जुडी हुई है। जहाँ डिग्री है, वहाँ अंग्रेज अर्थात अंग्रेजी मानस है, जो डिग्रीधारियों को देश-द्रोही व संस्कृति-द्रोही बनाता है। आज जिसके पास जितनी बड़ी डिग्री है, वह उतना ही ज्यादा पश्चिम की ओर उन्मुख है। आज कम पढे-लिखे लोग गाँव छोड़ने को तत्पर हैं, तो ज्यादा पढ़े लिखे लोग देश छोड़ विदेश जाने को प्रयंत्नशील है। यह शिक्षा-प्राणाली हमारे बच्चों को 'बौद्धिक दर्जे का मूर्ख' और 'पढ़ा-लिखा गवार' बना रही है जो अपने ही पैरों तले की जमीन को खोदने और अपनी ही थाली को छेदनें मे अपनी बौद्धिकता व शिक्षा का इस्तेमाल करते है। आज पढ़े-लिखे लोग ही भिन्न-भिन्न तरह की वर्जनाओं और अनैतिक कर्मों मे सक्रिय है। मानवीय मूल्य और नैतिक आदर्श अगर कही बचे हुए हैं तो अनपढ़ लोगो के पास ही, अन्यथा पढ़े-लिखे लोग तो विभिन्न तरह की समस्यायें ही पैदा कर रहें हैं। ऐसे में भारत के हित और उत्कर्ष के लिए सबसे जरुरी तो यह है कि देश भर में प्राचीन भारतीय गुरुकुलीय शिक्षा-प्रणाली अपनाई जाये और इस अंग्रेजी-मैकाले-शिक्षा प्रणाली का बहिष्कार हो।

अध्याय चतुर्थ

डीएवी किड्स केयर का परिचयात्मक विवरण

4.1 डीएवी का इतिहास

महान दार्शनिक महर्षि दयानंद सरस्वती की भविष्यसूचक दृष्टि को साकार करने के लिए 1886 में दयानंद एंग्लो वैदिक (डीएवी) ट्रस्ट और प्रबंधन सोसायटी अस्तित्व में आई। इसे 1860 के सोसायटी अधिनियम के तहत पंजीकृत किया गया था, और उसी वर्ष लाहौर में महात्मा हंसराज के मानद प्रधानाध्यापक के रूप में पहला डीएवी स्कूल स्थापित किया गया था।

आज, डीएवी कॉलेज प्रबंध समिति भारत में शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ी गैर-सरकारी संस्था है। इसने शिक्षा में निजी पहल का नेतृत्व करके राष्ट्र निर्माण में योगदान दिया है। 127 से अधिक वर्षों के करियर में, डीएवी के छात्र नोबेल पुरस्कार विजेता, प्रधान मंत्री, वैज्ञानिक, खिलाड़ी, रक्षाकर्मी, फिल्म अभिनेता, मीडियाकर्मी, सीईओ के रूप में अपने चुने हुए क्षेत्रों में अग्रणी बनकर उभरे हैं, जिन्होंने भारत के आर्थिक और सामाजिक विकास में सार्थक योगदान दिया है।

डीएवीसीएमसी गर्व से 780 से ज़्यादा शैक्षणिक संस्थानों का संचालन करता है, जिसमें सरकारी स्कूल, अनुदान प्राप्त स्कूल, कॉलेज, व्यावसायिक शिक्षा संस्थान और शोध संस्थान शामिल हैं। यह एसीसी, टाटा, रिलायंस, अडानी जैसे ब्लूचिप कॉरपोरेट घरानों और बीएचईएल, गेल, एसईसीएल आदि जैसे सार्वजनिक क्षेत्र के निगमों के लिए सौ से ज़्यादा प्रोजेक्ट और सेमी-प्रोजेक्ट स्कूलों का प्रबंधन भी करता है। डीएवीसीएमसी वंचित और बेसहारा बच्चों और महिलाओं के लिए आश्रम और अनाथालय चलाकर अपनी सामाजिक ज़िम्मेदारी निभाता है।

19वीं शताब्दी के मध्य में, जब भारत ब्रिटिश उत्पीड़न, अशिक्षा और सामाजिक पिछड़ेपन के अंधकार में डूब रहा था, भारतीय क्षितिज पर एक उज्ज्वल सितारा - महर्षि दयानंद सरस्वती का उदय हुआ - जिन्होंने भारत को बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से पुनर्जीवित किया।

उनके आह्वान 'वेदों की ओर लौटो' ने लोगों को प्रभावित किया और लोगों को खुद को सुधारने, झूठी मान्यताओं से छुटकारा पाने और एक उद्देश्यपूर्ण, तर्कसंगत और प्रगतिशील जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने सामाजिक बुराइयों के खिलाफ खड़े होकर आर्य समाज की स्थापना करके समाज में आध्यात्मिक और सामाजिक पुनर्जागरण की शुरुआत की और लोगों को सच्चे 'आर्य' बनने के लिए प्रेरित किया।

आर्य समाज के दस सिद्धांत

महर्षि दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज के दस सिद्धांत बताए जो शाश्वत हैं तथा सार्वभौमिक अपील और स्वीकार्यता रखते हैं।

- ईश्वर ही समस्त सच्चे ज्ञान तथा भौतिक विज्ञानों द्वारा ज्ञात समस्त ज्ञान का मूल स्रोत है।
- ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, चेतन, सर्वसुन्दर, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, अपरिवर्तनीय, अनादि, अतुलनीय, सबका आधार, सबका स्वामी, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सबका भीतर से नियंत्रक, नित्य, अविनाशी, अभय, नित्य, पवित्र और जगत का रचयिता है। केवल उसी की पूजा करनी चाहिए।
- वेद सभी सत्य ज्ञान की पुस्तकें हैं। इन्हें पढ़ना, दूसरों को पढ़ाना, सुनना और दूसरों को सुनाना सभी आर्यों का परम कर्तव्य है।
- सभी व्यक्तियों को सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सदैव उद्यत रहना चाहिए।
- सभी कार्य धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके ही करने चाहिए।
- आर्य समाज का प्राथमिक उद्देश्य समस्त विश्व का कल्याण करना है अर्थात् सभी मनुष्यों की शारीरिक, आध्यात्मिक और सामाजिक उन्नति करना है।
- तुम्हारा सभी के साथ व्यवहार प्रेम और न्याय से तथा धर्म के अनुसार होना चाहिए।
- अविद्या को दूर करना है (भ्रम और अज्ञान), और विद्या को बढ़ावा देना है। (ज्ञान की प्राप्ति और प्राप्ति)
- किसी को भी केवल अपनी उन्नति से संतुष्ट नहीं रहना चाहिए, बल्कि सभी के सामाजिक उत्थान के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए, दूसरों की उन्नति में अपनी उन्नति का अनुभव करना चाहिए।
- सभी व्यक्तियों को अपने व्यक्तिगत हितों को गौण रखते हुए, सामाजिक भलाई और सभी की भलाई के लिए स्वयं को समर्पित करना चाहिए, जबकि व्यक्ति व्यक्तिगत भलाई के लिए कार्य करने की स्वतंत्रता रखता है।

4.2 किड्स केयर का शुभारंभ: एक नई शुरुआत की ओर

किड्स केयर स्कूल एक बच्चे के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। यह न केवल बच्चे के लिए एक सीखने का माहौल बनाता है, बल्कि माता-पिता के लिए भी एक राहत का साधन होता है। यह बालक को भविष्य के लिए एक मजबूत नींव प्रदान करते है साथ ही बालक के सर्वांगीण विकास में सहायता करता है जहाँ पर बालक को शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सांस्कृतिक व सामाजिक रूप से सशक्त बनाते है जिसका परिणाम यह होता है की वह बालक जो किड्स केयर के सांचे में ढले होते हैं उनके जीवन में सफलता और अपार ऊंचाईयों तक पहुँचने की सम्भावनायें प्रबल होती है।

डीएवी किड्स केयर का परिचयात्मक विवरण

स्कूल का नाम– डीएवी किड्स केयर

स्कूल का पता– आर्य समाज भवन, रोडवेज बस अड्डा के पास, फतेहपुर (उत्तर प्रदेश)

स्थापना वर्ष– अप्रैल 7, 2008

संस्थापक का नाम– श्रीमती गीतांजली सिंह

प्रबंधन समिति–

- **अध्यक्ष– श्रीमती गीतांजली सिंह**
- **कोषाध्यक्ष– श्रीमती पुष्पलता सिंह**
- **उपाध्यक्ष– श्रीमती सरोज**

प्रधानाचार्या– श्रीमती गीतांजली सिंह

कुल शिक्षक– 8

कुल चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी– 6

कुल छात्र एवं छात्राएं– 100+

कुल कक्षाएं– 08

खेल कक्ष– 01

कला भवन– 01

शौचालय की व्यवथा– 02 (छात्र एवं छात्राओं के लिए अलग अलग शौचालय)

दिव्यांग छात्र एवं छात्राओं के लिए व्यवस्थायें– आवश्यक सुविधायें उपलब्ध हैं।

4.2.1 किड्स केयर स्कूलों का इतिहास

किड्स केयर स्कूलों का उद्भव और विकास समाज के बदलते स्वरूप और माता-पिता की बदलती जरूरतों के साथ हुआ है। आधुनिक समय में दोनों माता-पिता काम करने लगे हैं, जिसके कारण बच्चों की देखभाल और शिक्षा के लिए एक व्यवस्थित व्यवस्था की आवश्यकता महसूस हुई। किड्स केयर स्कूल, जिन्हें डेकेयर सेंटर, प्रीस्कूल या नर्सरी स्कूल भी कहा जाता है, बच्चों की देखभाल और शुरुआती शिक्षा के लिए समर्पित संस्थान हैं।

➢ ऐतिहासिक संदर्भ

- पश्चिमी देश: पश्चिमी देशों में, विशेषकर अमेरिका और यूरोप में, किड्स केयर स्कूलों का इतिहास काफी पुराना है। औद्योगिक क्रांति के बाद जब महिलाएं बड़ी संख्या में कार्यबल में शामिल हुईं, तब बच्चों की देखभाल के लिए इन संस्थाओं की स्थापना हुई।
- भारत: भारत में, किड्स केयर स्कूलों का प्रचलन पिछले कुछ दशकों में तेजी से बढ़ा है। शहरी क्षेत्रों में विशेषकर, जहां दोनों माता-पिता काम करते हैं, वहां किड्स केयर स्कूलों की मांग काफी अधिक है।

4.2.2 किड्स केयर स्कूलों के विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

किड्स केयर स्कूलों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर जानकारी प्राप्त करने के लिए, हमें पहले यह समझना होगा कि ये स्कूल किस प्रकार की शिक्षा प्रदान करते हैं और उनका विकास कैसे हुआ है।

किड्स केयर स्कूल आमतौर पर प्रीस्कूल और प्रारंभिक शिक्षा के लिए जाने जाते हैं। इन स्कूलों का उद्देश्य बच्चों को - एक सुरक्षित और पोषक वातावरण में शिक्षा प्रदान करना है, जिससे वे अपने प्रारंभिक वर्षों में ही सीखने की आदतें विकसित कर सकें।

➢ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- **प्रारंभिक विकास:** किड्स केयर स्कूलों का विचार 20वीं सदी के मध्य में विकसित हुआ, जब शिक्षा विशेषज्ञों ने यह महसूस किया कि प्रारंभिक शिक्षा बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

- **वैश्विक प्रसार:** 1970 और 1980 के दशकों में, किड्स केयर स्कूलों का प्रसार तेजी से हुआ। विभिन्न देशों में इन स्कूलों ने अपनी पहचान बनाई और शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया।
- **भारत में विकास:** भारत में किड्स केयर स्कूलों का आगमन 1990 के दशक में हुआ। इसके बाद से, इन स्कूलों ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।
- **वर्तमान स्थिति:** आज के समय में, किड्स केयर स्कूलों ने शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। ये स्कूल बच्चों को न केवल शैक्षिक ज्ञान प्रदान करते हैं, बल्कि उनके सामाजिक और भावनात्मक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

➢ विकास के प्रमुख चरण

- **शुरुआती दौर**
    - घरेलू देखभाल : शुरुआत में, बच्चों की देखभाल घर पर ही होती थी। पड़ोस की महिलाएं या रिश्तेदार बच्चों की देखभाल करते थे।
    - धार्मिक संस्थाएं: कुछ धार्मिक संस्थाओं ने भी बच्चों की देखभाल के लिए स्कूल शुरू किए।
- **औद्योगिक क्रांति के बाद**
    - पश्चिमी देशों में विकास: औद्योगिक क्रांति के बाद, पश्चिमी देशों में महिलाओं ने बड़ी संख्या में कारखानों में काम करना शुरू किया। इसने बच्चों की देखभाल के लिए औपचारिक व्यवस्थाओं की मांग को जन्म दिया।
    - सरकारी पहल: कई सरकारों ने बच्चों की देखभाल के लिए नीतियां बनाईं और सार्वजनिक रूप से वित्त पोषित केंद्रों की स्थापना की।
- **आधुनिक युग**
    - विविधता: आजकल, किड्स केयर स्कूल विभिन्न प्रकार के होते हैं, जैसे कि डेकेयर सेंटर, प्री-स्कूल, और नर्सरी स्कूल।

- पाठ्यक्रम: इन स्कूलों में बच्चों को न केवल देखभाल दी जाती है, बल्कि उन्हें शिक्षा भी दी जाती है। पाठ्यक्रमों में खेल, गतिविधियां, और सीखने के अनुभव शामिल होते हैं।
- प्रौद्योगिकी: प्रौद्योगिकी का उपयोग करके बच्चों को सीखने के नए तरीके प्रदान किए जा रहे हैं।

4.3 भारत में किड्स केयर स्कूलों का विकास

- शहरी क्षेत्रों में तेजी से वृद्धि: भारत के शहरी क्षेत्रों में, विशेषकर महानगरों में, किड्स केयर स्कूलों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है।
- मध्यम वर्ग का बढ़ता हुआ महत्व: मध्यम वर्ग के परिवारों में दोनों माता-पिता काम करते हैं, जिसके कारण किड्स केयर स्कूलों की मांग बढ़ी है।
- सरकार ने भी बच्चों की देखभाल के लिए कई नीतियां बनाई हैं, जैसे कि इंटीग्रेटेड चाइल्ड डे डेवलपमेंट स्कीम (ICDS)।

किड्स केयर स्कूलों का विकास समाज के बदलते स्वरूप और माता-पिता की बदलती जरूरतों का परिणाम है। ये स्कूल बच्चों को एक सुरक्षित और पोषित वातावरण प्रदान करते हैं जहां वे सीख सकते हैं, खेल सकते हैं और बढ़ सकते हैं।

4.4 स्कूल के उद्देश्य: एक विस्तृत दृष्टिकोण

स्कूल का उद्देश्य सिर्फ ज्ञान देना नहीं है, बल्कि बच्चों को एक संपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में विकसित करना है। स्कूल बच्चों को एक ऐसा मंच प्रदान करता है जहां वे सीखते हैं, खेलते हैं, और एकदूसरे के साथ बातचीत करते हैं। - स्कूल का उद्देश्य बच्चों को भविष्य के लिए तैयार करना है। किड्स केयर स्कूल बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। ये स्कूल बच्चों को एक सुरक्षित और पोषित वातावरण प्रदान करते हैं जहां वे सीख सकते हैं, खेल सकते हैं और बढ़ सकते हैं।

स्कूल सिर्फ पढ़ाई का स्थान नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा मंच है जहां बच्चे समग्र रूप से विकसित होते हैं। स्कूल के उद्देश्य सिर्फ ज्ञान देना ही नहीं, बल्कि बच्चों को एक अच्छा इंसान बनाना भी है। आइए **डीएवी किड्स केयर** स्कूल के विभिन्न उद्देश्यों पर विस्तार से चर्चा करें

➢ बौद्धिक विकास

- **ज्ञान का अर्जन:** स्कूल का प्राथमिक उद्देश्य बच्चों को विभिन्न विषयों का ज्ञान देना है।

- **विचार शक्ति का विकास:** बच्चों को सोचने, समझने और तर्क करने की क्षमता विकसित करना।
- **सृजनात्मकता को बढ़ावा देना:** बच्चों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करना और उन्हें नए विचारों को जन्म देने के लिए प्रेरित करना।

➢ सामाजिक विकास

- **समाज में समायोजन:** बच्चों को समाज में रहने और दूसरों के साथ तालमेल बिठाने की क्षमता सिखाना।
- **सहयोग और टीम वर्क:** बच्चों को समूह में काम करने और दूसरों के साथ सहयोग करने की आदत डालना।
- **समाज सेवा:** बच्चों में समाज सेवा की भावना जगाना और उन्हें दूसरों की मदद करने के लिए प्रेरित करना।

➢ नैतिक विकास

- **मूल्यों का विकास:** बच्चों में सत्य, अहिंसा, ईमानदारी जैसे मूल्यों का विकास करना।
- **चरित्र निर्माण:** बच्चों का चरित्र निर्माण करना और उन्हें एक अच्छे इंसान बनाना।
- **नैतिक मूल्यों को समझना:** बच्चों को नैतिक मूल्यों को समझना और उनका पालन करना सिखाना।

➢ शारीरिक विकास

- **स्वस्थ शरीर:** बच्चों को स्वस्थ रहने के लिए प्रेरित करना और उन्हें शारीरिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना।
- **शारीरिक विकास:** बच्चों का शारीरिक विकास सुनिश्चित करना।
- **स्वच्छता:** बच्चों को स्वच्छता का महत्व सिखाना।

➢ भावनात्मक विकास

- **आत्मविश्वास:** बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ाना।
- **सकारात्मक दृष्टिकोण:** बच्चों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।
- **तनाव प्रबंधन:** बच्चों को तनाव का सामना करने और उसे प्रबंधित करने के तरीके सिखाना।

➢ **अन्य उद्देश्य**

- **व्यवहारिक ज्ञान:** बच्चों को दैनिक जीवन में उपयोगी होने वाले व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करना।
- **कौशल विकास:** बच्चों में विभिन्न प्रकार के कौशल विकसित करना जैसे कि पढ़ना, लिखना, गणित करना आदि।
- **रुचियों का विकास:** बच्चों की रुचियों को पहचानना और उनका विकास करना।

4.5 किड्स केयर स्कूल का उद्देश्य: बच्चों का सर्वांगीण विकास

किड्स केयर स्कूल बच्चों के शुरुआती वर्षों में उनकी देखभाल और शिक्षा के लिए समर्पित होते हैं। इन स्कूलों का मुख्य उद्देश्य बच्चों को एक सुरक्षित और पोषित वातावरण प्रदान करना है जहां वे सीख सकें, खेल सकें और बढ़ सकें।

➢ **किड्स केयर स्कूल के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-**

- **शारीरिक विकास:** बच्चों को स्वस्थ रहने के लिए प्रेरित करना, शारीरिक गतिविधियों में शामिल करना और उनके शारीरिक विकास को बढ़ावा देना।
- **बौद्धिक विकास:** बच्चों की जिज्ञासा को बढ़ावा देना, उन्हें सीखने के नए तरीके सिखाना और उनकी बौद्धिक क्षमताओं को विकसित करना।
- **सामाजिक विकास:** बच्चों को दूसरों के साथ बातचीत करने और सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना, ताकि वे सामाजिक कौशल विकसित कर सकें।
- **भावनात्मक विकास:** बच्चों को अपनी भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने में मदद करना, आत्मविश्वास बढ़ाना और एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।
- **भाषा विकास:** बच्चों को भाषा कौशल विकसित करने में मदद करना, जैसे कि बोलना, सुनना, पढ़ना और लिखना।

किड्स केयर स्कूलों में बच्चों को निम्नलिखित गतिविधियों के माध्यम से शिक्षित किया जाता है

- **खेल:** खेल बच्चों के लिए सीखने का एक मजेदार तरीका है। किड्स केयर स्कूलों में विभिन्न प्रकार के खेलों का आयोजन किया जाता है जो बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास में मदद करते हैं।

- **कला और शिल्प:** कला और शिल्प की गतिविधियां बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ावा देती हैं और उन्हें नए विचारों को जन्म देने के लिए प्रेरित करती हैं।
- **संगीत:** संगीत बच्चों के भावनात्मक विकास में मदद करता है और उनकी सुनने की क्षमता को बढ़ाता है।
- **कहानियां:** कहानियां बच्चों की कल्पना शक्ति को बढ़ाती हैं और उन्हें नई चीजें सीखने में मदद करती हैं।
- **भ्रमण:** भ्रमण बच्चों को अपने आसपास की दुनिया के बारे में जानने का एक शानदार तरीका है।

4.6 डीएवी किड्स केयर स्कूल की स्थापना

किड्स केयर स्कूल की स्थापना करना गीतांजली जी का एक महत्वपूर्ण कदम है। यह न केवल बच्चों के लिए एक सीखने का माहौल बनाता है, बल्कि समुदाय के लिए भी एक मूल्यवान संसाधन बन सका है।

➢ डीएवी किड्स केयर स्कूल का पाठ्यक्रम और गतिविधियाँ

डीएवी किड्स केयर स्कूल बच्चों के शुरुआती वर्षों में उनकी देखभाल और शिक्षा के लिए समर्पित है। इस स्कूल का पाठ्यक्रम और गतिविधियां बच्चों के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित होती हैं।

डीएवी किड्स केयर स्कूल का पाठ्यक्रम बच्चों की उम्र और विकास के स्तर के अनुसार बनाया जाता है। इसमें आमतौर पर निम्नलिखित विषय शामिल किये गए हैं।

- **भाषा विकास**
    - कहानियां सुनाना और पढ़ना
    - शब्दों का उच्चारण और अर्थ समझना
    - सरल वाक्य बनाना
- **गणित**
    - संख्याओं की पहचान
    - गिनती
    - आकार और रंगों की पहचान
- **विज्ञान**
    - आसपास के वातावरण के बारे में जानना
    - प्राकृतिक घटनाओं को समझना
    - प्रयोग करना

- **सामाजिक अध्ययन**
    - परिवार और समुदाय के बारे में जानना
    - विभिन्न संस्कृतियों के बारे में जानना
- **कला और शिल्प**
    - ड्राइंग, पेंटिंग, मॉडलिंग
    - कल्पनाशीलता का विकास
- **संगीत**
    - गीत गाना
    - वाद्य यंत्र बजाना
    - लय का अनुभव करना

➢ **गतिविधियां**

किड्स केयर स्कूलों में बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियां आयोजित की जाती हैं, जैसे:

- **खेल**
    - इनडोर और आउटडोर खेल
    - टीम वर्क और सहयोग को बढ़ावा देना
- **भूमिका निभाना**
    - बच्चों की कल्पना शक्ति को बढ़ावा देना
    - सामाजिक कौशल विकसित करना
- **कहानी सुनाना**
    - बच्चों की भाषा और कल्पना शक्ति का विकास करना
- **कला और शिल्प**
    - बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ावा देना
- **संगीत और नृत्य**
    - बच्चों की भावनाओं को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना
- **प्रकृति की गतिविधियां**
    - बच्चों को प्रकृति से जोड़ना
    - पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाना

➢ **डीएवी किड्स केयर स्कूल में बच्चों को क्या सिखाया जाता है?**

डीएवी किड्स केयर स्कूल में बच्चों को सिर्फ अकादमिक ज्ञान ही नहीं दिया जाता, बल्कि उन्हें कई अन्य महत्वपूर्ण चीजें भी सिखाई जाती हैं, जैसे:

- **स्वतंत्रता:** बच्चों को स्वतंत्र रूप से सोचने और कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- **सहयोग:** बच्चों को दूसरों के साथ सहयोग करना सिखाया जाता है।
- **समाधान:** समस्याओं का समाधान खोजने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित किया जाता है।
- **आत्मविश्वास:** बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ाया जाता है।
- **सकारात्मक दृष्टिकोण:** बच्चों को सकारात्मक दृष्टिकोण रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

डीएवी किड्स केयर स्कूल बच्चों के शुरुआती वर्षों में उनकी देखभाल और शिक्षा के लिए एक सुरक्षित और पोषित वातावरण प्रदान करता है। इस स्कूल में बच्चों को सिर्फ पढ़ाई ही नहीं सिखाई जाती, बल्कि उनका सर्वांगीण विकास भी किया जाता है। आइए जानते हैं कि डीएवी किड्स केयर स्कूल में बच्चों को क्या-क्या सिखाया जाता है।

➢ **बुनियादी कौशल**

- **भाषा विकास:** बच्चों को बोलना, सुनना, पढ़ना और लिखना सिखाया जाता है। कहानियां सुनाना, शब्दों का उच्चारण करना और सरल वाक्य बनाना जैसे गतिविधियों के माध्यम से उनकी भाषा की समझ को बढ़ाया जाता है।
- **गणित:** बच्चों को गिनती, संख्याओं की पहचान, आकार और रंगों को समझना सिखाया जाता है।
- **विज्ञान:** बच्चों को आसपास के वातावरण के बारे में जानने के लिए प्रेरित किया जाता है। वे प्राकृतिक घटनाओं को समझना और छोटे-छोटे प्रयोग करना सीखते हैं।

➢ **सामाजिक विकास**

- **सहयोग:** बच्चों को दूसरों के साथ सहयोग करना और टीम वर्क करना सिखाया जाता है।
- **समाज सेवा:** बच्चों को समाज सेवा की भावना विकसित करने के लिए प्रेरित किया जाता है।
- **सभ्यता:** बच्चों को बड़ों का आदर करना और दूसरों के प्रति विनम्र रहना सिखाया जाता है।

➢ **भावनात्मक विकास**

- **आत्मविश्वास:** बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए उन्हें विभिन्न गतिविधियों में शामिल किया जाता है।

- **सकारात्मक दृष्टिकोण:** बच्चों को सकारात्मक सोच विकसित करने के लिए प्रेरित किया जाता है।
- **भावनाओं को समझना:** बच्चों को अपनी और दूसरों की भावनाओं को समझना सिखाया जाता है।

शारीरिक विकास:

- **स्वस्थ आहार:** बच्चों को स्वस्थ आहार के बारे में बताया जाता है और उन्हें स्वस्थ भोजन खाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- **शारीरिक गतिविधियां:** बच्चों को खेलने और व्यायाम करने के लिए प्रेरित किया जाता है।
- **स्वच्छता:** बच्चों को स्वच्छता का महत्व सिखाया जाता है।

➢ **रचनात्मकता**

- **कला और शिल्प:** बच्चों को ड्राइंग, पेंटिंग, मॉडलिंग जैसी गतिविधियों के माध्यम से अपनी रचनात्मकता को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- **संगीत:** बच्चों को संगीत बजाना और गाना सिखाया जाता है।

➢ **अन्य कौशल**

- **समस्या समाधान:** बच्चों को समस्याओं का समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- **तर्क शक्ति:** बच्चों को तर्क शक्ति विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- **निर्णय लेना:** बच्चों को स्वयं निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

4.7 डीएवी किड्स केयर स्कूल में की जाने वाली गतिविधियाँ

डीएवी किड्स केयर स्कूल बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए एक सुरक्षित और मजेदार वातावरण प्रदान करता है। इस स्कूल में बच्चों को विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से सिखाया और मनोरंजन किया जाता है। आइए जानते हैं कि किड्स केयर स्कूलों में आम तौर पर कौन-कौन सी गतिविधियां होती हैं।

शैक्षिक गतिविधियाँ

- **कहानी सुनाना:** कहानियां बच्चों की कल्पना शक्ति को बढ़ाती हैं और उनकी भाषा का विकास करती हैं।
- **गीत और नृत्य:** संगीत और नृत्य बच्चों को भावनात्मक रूप से व्यक्त करने और समन्वय विकसित करने में मदद करते हैं।
- **खेल:** विभिन्न प्रकार के खेल बच्चों को शारीरिक रूप से सक्रिय रहने और सामाजिक कौशल विकसित करने में मदद करते हैं।
- **कला और शिल्प:** ड्राइंग, पेंटिंग और मॉडलिंग जैसी गतिविधियां बच्चों की रचनात्मकता को बढ़ावा देती हैं।
- **भूमिका निभाना:** भूमिका निभाना बच्चों को विभिन्न स्थितियों को समझने और सामाजिक कौशल विकसित करने में मदद करता है।
- **प्रकृति की गतिविधियां:** बच्चों को प्रकृति से जोड़ने और पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की गतिविधियां कराई जाती हैं।

विकासात्मक गतिविधियाँ

- **भाषा विकास:** बच्चों को शब्दों का उच्चारण करना, वाक्य बनाना और पढ़ना सिखाया जाता है।
- **गणित:** बच्चों को गिनती, आकार, रंग और संख्याओं की समझ विकसित करने के लिए विभिन्न गतिविधियां कराई जाती हैं।
- **विज्ञान:** बच्चों को आसपास के वातावरण के बारे में जानने और प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया जाता है।
- **सामाजिक अध्ययन:** बच्चों को परिवार, समुदाय और विभिन्न संस्कृतियों के बारे में जानने के लिए सिखाया जाता है।

अन्य गतिविधियाँ

- **खेल का समय:** बच्चों को स्वतंत्र रूप से खेलने और अपनी कल्पना शक्ति का उपयोग करने के लिए समय दिया जाता है।
- **खाना बनाना:** बच्चों को स्वस्थ भोजन के बारे में सिखाया जाता है और उन्हें खाना बनाने में शामिल किया जाता है।
- **योजना बनाना:** बच्चों को छोटी-छोटी योजनाएं बनाने और उन्हें पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।
- **संगीत वाद्ययंत्र बजाना:** बच्चों को विभिन्न प्रकार के संगीत वाद्ययंत्र बजाना सिखाया जाता है।

गतिविधियों की महत्ता

ये गतिविधियां बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये बच्चों को:

- **शारीरिक रूप से स्वस्थ** बनाती हैं।
- **मानसिक रूप से तेज** बनाती हैं।
- **सामाजिक रूप से सक्रिय** बनाती हैं।
- **रचनात्मक** बनाती हैं।
- **आत्मविश्वास बढ़ाती हैं।**

4.8 डीएवी किड्स केयर में प्रवेश प्रक्रिया

किड्स केयर स्कूल में अपने बच्चे का दाखिला कराना माता-पिता के लिए एक महत्वपूर्ण निर्णय होता है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि उनका बच्चा एक सुरक्षित और पोषित वातावरण में पले-बढ़ेगा, जिसके लिए प्रवेश प्रक्रिया का स्पष्ट व सरल होना अतिआवश्यक है।

डीएवी किड्स केयर स्कूल में प्रवेश प्रक्रिया के चरण

- **सूचना प्राप्त करना**
    - **स्कूल की वेबसाइट:** सबसे पहले, अभिभावक स्कूल की वेबसाइट पर जाकर प्रवेश प्रक्रिया के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। www.davkidscare.com

- **स्कूल का दौरा:** अभिभावक स्कूल का दौरा करके प्रवेश सम्बंधित सूचना, स्कूल के वातावरण व सुविधाओं के बारे में जानकरी वहां के शिक्षकों और कर्मचारियों से मिलकर प्राप्त कर सकते हैं।
- **सूचना बोर्ड:** स्कूल के परिसर में या आसपास के क्षेत्र में प्रवेश संबंधी सूचनाएं लगी हो सकती हैं।

❖ **आवेदन पत्र भरना**

- **आवेदन पत्र प्राप्त करना:** अभिभावक स्कूल से आवेदन पत्र प्राप्त कर सकते है या स्कूल की वेबसाइट से डाउनलोड कर सकते है।
- **आवश्यक जानकारी:** आवेदन पत्र में बच्चे का नाम, जन्मतिथि, माता-पिता का विवरण, संपर्क जानकारी आदि भरें।
- **दस्तावेज:** आवेदन पत्र के साथ बच्चे का जन्म प्रमाण पत्र,पहचान प्रमाण पत्र, टीकाकरण रिकॉर्ड, और अन्य आवश्यक दस्तावेज संलग्न करें।

❖ **दस्तावेजों का सत्यापन**

- स्कूल, अभिभावक द्वारा दिए गए दस्तावेजों का सत्यापन करेगा।
- यदि आवश्यक हो, तो आपको अतिरिक्त दस्तावेज जमा करने के लिए कहा जा सकता है।

❖ **साक्षात्कार**

- स्कूल में प्रवेश के लिए साक्षात्कार लिया जाता है।
- साक्षात्कार में बच्चे और माता-पिता दोनों से बात की जाती है।
- साक्षात्कार का उद्देश्य बच्चे की व्यक्तित्व और स्कूल के वातावरण के अनुकूल होने की क्षमता का आकलन करना है।

❖ **प्रतीक्षा सूची**

- यदि आवेदकों की संख्या सीटों की संख्या से अधिक है, तो बच्चा प्रतीक्षा सूची में जा सकता है।
- स्कूल सूचित करेगा कि बच्चा प्रवेश के लिए चुना गया है या नहीं।

❖ **फीस जमा करना**

- यदि बच्चा प्रवेश के लिए चुना जाता है, तो निर्धारित शुल्क जमा करना होगा।
- शुल्क में ट्यूशन फीस, विकास शुल्क, और अन्य शुल्क शामिल हो सकते हैं।

4.9 किड्स केयर में कक्षा स्तर

डीएवी किड्स केयर स्कूल में कक्षा के स्तर को आमतौर पर बच्चों की उम्र के आधार पर निर्धारित किया जाता है। हालांकि, यह अन्य स्कूलों से भिन्न हो सकता है।

- **नर्सरी:** यह आमतौर पर 2-3 साल के बच्चों के लिए होती है। इस स्तर पर बच्चों को बुनियादी बातें जैसे कि खेलना, गाना, और सामाजिक कौशल सीखाना शुरू किया जाता हैं।
- **लॉगर:** यह 3-4 साल के बच्चों के लिए होती है। इस स्तर पर बच्चों को अक्षरों, संख्याओं, और रंगों के बारे में सिखाया जाता है।
- **न्यू केजी:** यह 4-5 साल के बच्चों के लिए होती है। इस स्तर पर बच्चों को अधिक जटिल अवधारणाएं जैसे कि संख्याओं को जोड़ना-घटाना और अक्षरों को मिलाकर शब्द बनाना सिखाया जाता है।
- **ओल्ड केजी:** यह 5-6 साल के बच्चों के लिए होती है। इस स्तर पर बच्चों को स्कूल के लिए तैयार किया जाता है। उन्हें पढ़ना, लिखना, और गणित की बुनियादी बातें सिखाई जाती हैं।
- कुछ स्कूलों में प्री-नर्सरी और पोस्ट-केजी जैसे स्तर भी होते हैं।

कक्षा के स्तर को निर्धारित करने में कई कारक शामिल किये गए हैं, जैसे कि

- **बच्चे की उम्र:** यह सबसे महत्वपूर्ण कारक है।
- **बच्चे का विकासात्मक स्तर:** बच्चे की शारीरिक, मानसिक, और सामाजिक विकास का आकलन किया जाता है।

कक्षा के स्तर का महत्व

- **उचित शिक्षा:** बच्चे को उसकी उम्र और विकास के स्तर के अनुसार शिक्षा दी जाती है।

- **सामाजिक विकास:** बच्चे अपनी उम्र के अन्य बच्चों के साथ बातचीत करते हैं और सामाजिक कौशल विकसित करते हैं।
- **आत्मविश्वास:** जब बच्चे को अपनी उम्र के अन्य बच्चों के साथ रखा जाता है, तो उसका आत्मविश्वास बढ़ता है।

4.10 गणवेश

किड्स केयर स्कूलों में गणवेश पहनना आम बात है। गणवेश पहनाने के पीछे कई कारण होते हैं, जैसे-

- **एकरूपता:** गणवेश सभी बच्चों को एक समान रूप देता है, जिससे स्कूल में एकता और अनुशासन का माहौल बनता है।
- **सादगी:** गणवेश से बच्चों को यह तय करने में कम समय लगता है कि उन्हें क्या पहनना है, जिससे वे सीखने पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।
- **सुरक्षा:** कुछ स्कूलों में गणवेश पर स्कूल का नाम या लोगों होता है, जिससे बच्चों को आसानी से पहचाना जा सकता है और खो जाने की स्थिति में उन्हें ढूंढना आसान हो जाता है।
- **सामाजिक अंतर:** गणवेश पहनने से बच्चों के बीच आर्थिक अंतर कम होता है, जिससे सभी बच्चे समान महसूस करते हैं।

डीएवी किड्स केयर स्कूल में गणवेश

डी०ए०वी०किड्स स्कूल में गणवेश का डिजाइन अन्य स्कूल से स्कूल में भिन्न हो सकता है, लेकिन आमतौर पर यह सरल और आरामदायक होता है। जो इस प्रकार है:

- **शर्ट:** हल्के पीले रंग की चेक शर्ट
- **पैंट या स्कर्ट:** पीले रंग की पैंट या स्कर्ट
- **स्वेटर:** सर्दियों के मौसम के लिए
- **जैकेट:** सर्दियों के मौसम के लिए
- **जूते:** सफेद या काले रंग के जूते

गणवेश पहनने के फायदे

- **अनुशासन:** गणवेश पहनने से बच्चों में अनुशासन और नियमों का पालन करने की आदत विकसित होती है।
- **आत्मविश्वास:** जब सभी बच्चे एक समान कपड़े पहनते हैं, तो कोई भी बच्चा अपने कपड़ों के कारण शर्मिंदा महसूस नहीं करता है।
- **पहचान:** गणवेश से स्कूल की पहचान बनती है और स्कूल के प्रति बच्चों का लगाव बढ़ता है।

गणवेश पहनने के नुकसान

- **रचनात्मकता में बाधा:** कुछ लोग मानते हैं कि गणवेश पहनने से बच्चों की रचनात्मकता पर अंकुश लगता है।
- **आराम:** कुछ बच्चों को गणवेश पहनने में असहज महसूस हो सकता है, खासकर अगर यह बहुत तंग या गर्म हो।

अंतिम रूप से, गणवेश पहनने का निर्णय प्रत्येक स्कूल स्वयं लेता है। कुछ स्कूल गणवेश को अनिवार्य बनाते हैं, जबकि अन्य स्कूलों में गणवेश पहनना वैकल्पिक होता है।

4.11 डीएवी किड्स केयर स्कूल में अनुशासन

किड्स केयर स्कूलों में अनुशासन का एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। स्कूल बच्चों को एक अनुशासित वातावरण प्रदान करते हैं जहां वे सीख सकते हैं, खेल सकते हैं और बढ़ सकते हैं। स्कूलों में अनुशासन के लिए निम्नलिखित तरीके अपनाए जाते हैं:

- **नियम और विनियम:** स्कूलों में स्पष्ट नियम और विनियम होते हैं जिनका पालन सभी बच्चों को करना होता है।
- **सजा और पुरस्कार:** बच्चों को उनके व्यवहार के आधार पर सजा या पुरस्कार दिए जाते हैं।
- **शिक्षकों द्वारा मार्गदर्शन:** शिक्षक बच्चों को सही और गलत में अंतर करना सिखाते हैं।

- **माता-पिता का सहयोग:** स्कूल माता-पिता के साथ मिलकर बच्चों में अनुशासन विकसित करने का प्रयास करते हैं।

अनुशासन एक सतत प्रक्रिया है। यह बच्चों को जीवन भर के लिए फायदेमंद होता है।

यहां कुछ अतिरिक्त सुझाव दिए गए हैं-

- **बच्चों को जिम्मेदारियां दें:** बच्चों को छोटी-छोटी जिम्मेदारियां दें ताकि वे स्वतंत्र रूप से सोच सकें और निर्णय ले सकें।
- **बच्चों को सुनें:** बच्चों को हमेशा सुनें और उनकी भावनाओं को समझने की कोशिश करें।
- **बच्चों को प्रोत्साहित करें:** बच्चों को उनके प्रयासों के लिए प्रोत्साहित करें।
- **धैर्य रखें:** अनुशासन विकसित करने में समय लगता है। धैर्य रखें और लगातार प्रयास करते रहें।

4.12 डीएवी किड्स केयर में कार्य अवधि: किड्स केयर में कार्य अवधि विभिन्न कारकों पर निर्भर करती है, जैसे कि:

- बच्चे की उम्र: छोटे बच्चों को अधिक बार देखभाल की आवश्यकता होती है, इसलिए उनके लिए कार्य अवधि कम हो सकती है। बड़े बच्चे थोड़ी अधिक स्वतंत्र होते हैं और इसलिए उनके लिए कार्य अवधि लंबी हो सकती है।
- स्कूल की नीतियां: प्रत्येक स्कूल की अपनी नीतियां होती हैं जो कार्य अवधि को निर्धारित करती हैं। कुछ स्कूलों में पूरे दिन की देखभाल होती है, जबकि अन्य स्कूलों में आधी दिन की देखभाल होती है।
- माता-पिता की कार्य व्यवस्था: माता-पिता की कार्य व्यवस्था के आधार पर भी कार्य अवधि तय की जाती है।
- बच्चे की व्यक्तिगत जरूरतें: कुछ बच्चों को अन्य बच्चों की तुलना में अधिक देखभाल की आवश्यकता होती है, इसलिए उनके लिए कार्य अवधि व्यक्तिगत रूप से तय की जा सकती है।
- बच्चे की उम्र के अनुसार कार्य अवधि

4.13 डीएवी किड्स केयर में दिनचर्या

किड्स केयर में बच्चों को एक सुरक्षित और पोषित वातावरण प्रदान करने के लिए एक अच्छी दिनचर्या का होना बहुत महत्वपूर्ण है। दिनचर्या बच्चों को अनुशासन, स्वतंत्रता, और जिम्मेदारी सिखाती है। यह बच्चों को दिनभर ऊर्जावान और खुश रहने में भी मदद करती है।

किड्स केयर में दिनचर्या बनाते समय, निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना दिया गया है :

- **बच्चों की उम्र:** दिनचर्या बच्चों की उम्र के अनुसार होनी चाहिए।
- **बच्चों की रुचि:** दिनचर्या में बच्चों की रुचि के अनुसार गतिविधियां शामिल करें।
- **लचीलापन:** दिनचर्या में लचीलापन रखें ताकि जरूरत पड़ने पर बदलाव किया जा सके।

एक अच्छी दिनचर्या बच्चों को एक स्वस्थ और खुशहाल जीवन जीने में मदद करती है।

4.14 डीएवी किड्स केयर में में प्रार्थना सत्र

किड्स केयर में प्रार्थना सत्र एक ऐसा समय होता है जब बच्चों को धार्मिक मूल्यों और नैतिक शिक्षा दी जाती है। यह बच्चों को एक सकारात्मक और करुणामय दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करता है।

- **नैतिक शिक्षा:** बच्चों को अच्छे और बुरे में अंतर करना सिखाना।
- **शांति और सद्भाव:** बच्चों में शांति और सद्भाव की भावना विकसित करना।
- **आत्मविश्वास बढ़ाना:** बच्चों को आत्मविश्वास और आत्मसम्मान बढ़ाने में मदद करना।
- **धन्यवाद देना:** बच्चों को अपने परिवार, दोस्तों और भगवान के प्रति आभार व्यक्त करना सिखाना।

प्रार्थना सत्र के उद्देश्य

- **धार्मिक मूल्यों का विकास:** बच्चों को अपने धर्म के मूल्यों से परिचित कराना।

प्रार्थना सत्र में क्या होता है?

प्रार्थना सत्र में विभिन्न गतिविधियां होती हैं, जैसे-

- **गीत:** धार्मिक गीत गाना।

- **कहानियां:** धार्मिक कहानियां सुनाना।
- **प्रार्थना:** एक साथ प्रार्थना करना।
- **चर्चा:** धार्मिक विषयों पर चर्चा करना।
- **ध्यान:** ध्यान करना।

किड्स केयर में प्रार्थना सत्र के फायदे

- **मन की शांति:** प्रार्थना बच्चों के मन को शांत करती है और तनाव को कम करती है।
- **सकारात्मक दृष्टिकोण:** प्रार्थना बच्चों में एक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करती है।
- **सामाजिक कौशल:** प्रार्थना बच्चों को दूसरों के साथ बातचीत करना और सहयोग करना सिखाती है।
- **आत्मविश्वास:** प्रार्थना बच्चों को आत्मविश्वास और आत्मसम्मान बढ़ाने में मदद करती है।

प्रार्थना सत्र के दौरान क्या ध्यान रखा जाता है ?

- **सभी धर्मों का सम्मान:** सभी धर्मों का सम्मान करना और किसी भी धर्म के खिलाफ भेदभाव नहीं करना चाहिए।
- **स्वेच्छा से भागीदारी:** बच्चों को प्रार्थना सत्र में भाग लेने के लिए मजबूर नहीं किया जाता है।
- **सरल भाषा:** बच्चों की समझ के अनुसार सरल भाषा का उपयोग किया जाता है।
- **मजेदार गतिविधियां:** प्रार्थना सत्र को मजेदार और रोचक भी बनया जाता है।

किड्स केयर में प्रार्थना सत्र बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह बच्चों को एक अच्छा इंसान बनने में मदद करता है।

विद्यालय में प्रार्थना तीन प्रकार की होती है।

1.गुरु मंत्र- गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु: गुरु देवो महेश्वरा: गुरु साक्षात परम ब् ब्रह्मा तस्मै श्री गुरुवे नमः

2.गायत्री मंत्र-ऊं भूर्भुवः स्व: तत सवितुर्वरेन्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो योना: प्रचोदयात्।।

3. सरस्वती वंदना- सरस्वती नमस्तुभ्यं वरदे कामरूपिणी।

विद्यारम्भम् करिष्यामि सिद्धिर्भवतु में सदा।।

4.15 डीएवी किड्स केयर में प्रक्षालन व्यवस्था

डीएवी किड्स केयर जैसी प्रतिष्ठित संस्था में बच्चों की स्वच्छता और स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखा जाता है। इसीलिए, डीएवी में एक व्यवस्थित प्रच्छालन व्यवस्था लागू की जाती है।

डीएवी किड्स केयर में प्रच्छालन व्यवस्था के प्रमुख बिंदु:

- **स्वच्छ पानी**: बच्चों को साफ और स्वच्छ पानी उपलब्ध कराया जाता है।
- **साबुन:** बच्चों को हाथ धोने के लिए गुणवत्तापूर्ण साबुन उपलब्ध कराया जाता है।
- **हाथ धोने का समय:** बच्चों को नियमित अंतराल पर हाथ धोने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, खासकर भोजन से पहले और शौचालय जाने के बाद।
- **शौचालय की स्वच्छता:** शौचालयों को नियमित रूप से साफ किया जाता है और उनमें सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध होती हैं।
- **सैनिटाइजर:** सार्वजनिक स्थानों पर सैनिटाइजर की उपलब्धता सुनिश्चित की जाती है।
- **स्वास्थ्य जांच:** बच्चों का नियमित रूप से स्वास्थ्य जांच किया जाता है।

पंचम अध्याय

डीएवी किड्स केयर की विशिष्टताएँ एवं उपलब्धियाँ

5.1 "मैकाले-पुत्र" नहीं, "महर्षि-पुत्र" का निर्माण करना है

'डीएवी किड्स केयर' आर्य शिक्षण प्राप्त करने के लिए श्रेष्ठ विकल्प है। यह संस्था आधुनिक विनाशकारी मैकाले शिक्षा-पद्धति से देश को मुक्त करवाने के लिए प्रयत्नशील है। व्यक्ति-निर्माण से कुटुम्ब-निर्माण, कुटुम्ब-निर्माण से समाज-निर्माण, समाज-निर्माण से राष्ट्र-निर्माण एवं राष्ट्र-निर्माण से विश्वास-निर्माण करने मे अपना महत्वपूर्ण सहयोग करने के लिए कटिबद्ध है।

डीएवी स्कूल का ऐसा मानना है कि इस स्कूल से शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात विद्यार्थी 'मैकाले-पुत्र' नहीं, किन्तु 'महर्षि-पुत्र' बनकर भारत को जगदगुरु बनाने में अपना योगदान करेंगे।

5.2 निःशुल्क वैदिक कार्यशाला का आयोजन

डीएवी किड्स केयर वैदिक कालीन शिक्षा के अनुरूप प्रति रविवार को निःशुल्क वैदिक शिक्षा एवं यज्ञशाला की शिक्षा दी जाती है जहाँ श्रेष्ठ शिक्षक, श्रेष्ठ शिक्षा, श्रेष्ठ शाला, श्रेष्ठ संस्कार के द्वारा श्रेष्ठ बालकों का निर्माण किया जाता है।

ऐसे कार्यशाला से बच्चों के मन में शांति, वेदों के प्रति रूचि को विकसित करने में मदद मिलती है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति को आधुनिक भारत के लिए बड़ी चुनौती के रुप में देखा जा रहा है। गीतांजली जी के द्वारा आर्य कालीन शिक्षा पद्धति के क्षेत्र में एक अभिनव प्रयोग किये जा रहें हैं। इनके द्वारा आयोजित यज्ञशाला में दस बच्चों में एक शिक्षक, शिक्षा प्रदान करते हैं।

5.3 विद्या, कला एवं कौशल का त्रिवेणी संगम

डीएवी किड्स केयर आधुनिक शिक्षा प्रणाली का प्रभावशाली विकल्प है जहाँ अनुभवी शिक्षकों एवं धर्म आचार्यों द्वारा श्रेष्ठ आर्य एवं आधुनिक शिक्षा प्रदान की जाती है।

डीएवी किड्स केयर मे ऋषिमुनिओं द्वारा प्रतिपादित प्राचीन विद्याओं एवं विविध शास्त्रों का अध्ययन, विविध प्रकार की जीवनोपयोगी कलाओं एवं प्रवृत्तियों का अभ्यास साथ ही साथ विविध प्रकार के प्रशिक्षण द्वारा मानसिक एवं शारीरिक संतुलन, निड़रता एवं एकाग्रता आदि गुणों का विकास हो, ऐसी क्रियाओं का अभ्यास कराया जाता है। इसलिए इस स्कूल को विद्या, कला एवं कौशल का त्रिवेणी संगम भी कहा जा सकता है।

5.4 समग्र एवं सर्वांगीण विकास

डीएवी किड्स केयर एक ऐसा स्कूल है जो विद्यार्थियों के समग्र एवं सर्वागीण विकास की पक्षधर है।

बच्चों को इस स्कूल में आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ तत्वज्ञान, प्रभुभक्ति के संस्कारों के साथ-साथ संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, वैदिक गणित,धर्मशास्त्र, संगीत-कला (गीत-नृत्य-वादन) अभिनयकला, चित्रकला, हस्तेलखन कला, आयोजन-प्रबन्ध, योगाभ्यास, इतिहास, भूगोल, कराटे, मार्शल आर्ट, कला, कुश्ती आदि सिखायी जाती है।

इस प्रकार इस स्कूल में शिक्षा-विद्या प्राप्त करके प्रशिक्षित हुए बच्चें जीवन का सर्वतोमुखी विकास पाकर इस देश के लिए एक प्रखर राष्ट्र-भक्त और संस्कृति-भक्त बनकर बाहर आऐंगें।

आर्य जीवन पद्धति के माध्यम से इस पाठशाला में पर्यावरण सुरक्षा एवं ऊर्जा के पुनः प्राप्त स्त्रोत, प्रदूषण नियंत्रण, जल संचय इत्यादि का प्रायोगिक ज्ञान दिया जाता है।

5.5 भारतीय पद्धति की सुव्यवस्था

हमारी भारतीय आर्य परंपरा में विद्या प्राप्ति की मुख्य व्यवस्था के रुप में गुरुकुलम् एवं पाठशालाऐं केन्द्र स्थान पर थे। आज से 200 वर्ष पहले तक जिस प्रकार की उत्तम शिक्षा भारत में दी जाती थी, वैसी विश्व के किसी भी देश में नही दी जाती थी। अंग्रेजों के आगमन से पहले शिक्षा और विद्या के क्षेत्र में भारत दुनिया के देशों मे सबसे अग्रणी था। मनुष्य के आन्तरिक गुणों को उजागर करके उसके दोषों का निर्मूलन करने वाली महान भारतीय शिक्षा प्रणाली को विदेशी आक्रमणों का कुठारघात सहना पड़ा।

ध्वस्त हुई प्राचीन शिक्षा प्रणाली को पुनः जीवित किए बिना भारतीय प्रजा एवं संस्कृति का समुद्धार असम्भव है। अतः इस परम्परा को पुनः स्थापित करना अति आवश्यक है। तभी मैकाले शिक्षा के दुष्प्रभाव से हमारी आज जो दुर्दशा हुई है, उससे हम भारत को बचा पायेगे।

5.7 स्वास्थ्यदायक आहार

डीएवी किड्स केयर में बच्चों को पोषण के लिए विद्यार्थियों को लकडी के चूल्हे पर बनाया गया भोजन करने की सलाह दी जाती है जो अत्यन्त स्वादिष्ट होता है। भोजन मे रासायनिक वस्तुओं का उपयोग करने से मना किया जाता है एवं किसी भी प्रकार के रंग तथा बेकिंग पाउडर जैसी वस्तुओ का उपयोग करने से भी मना किया जाता है । शाक-भाजी से लेकर अनाज तक सभी खाद्य वस्तुऐं जैविक विधि से उपजायी हुयी प्रयोग में लाने की सलाह दी जाती हैं।

प्रत्येक विद्यार्थियों को प्रतिदिन सुबह भारतीय गायों का उष्णोधार दुग्धपान सारस्वत चूर्ण के साथ करने का सुझाव दिया जाता है। एवं उसके फायदे भी बताएं जाते है। सदैव ऋतु के अनुकूल एवं आयुर्वेदिक नियमों को ध्यान में

रखते हुए भोजन की सलाह दी जाती हैं। भोजन सूर्योदय के बाद और सूर्यास्त से पहले करने का सुझाव दिया जाता है।

5.8 उपलब्धियाँ

INDIA LEADERSHIP AWARD 2018,

BEST SCHOOL IN FATEHPUR

3 U.P. STATE STUDENTS
OLYMPIC GAMES 2017-18
खेल, संस्कृति एवं विद्या का
महाकुम्भ
CHIEF GUEST
Nothing can ever adequately show our
Appreciation for your Efforts, Dedication & Blessing to us
Warm Regards

3U.P STATE STUDENT

OLAMPIC GAMES, 2018

WRITING COMPETTION

BY

CHATANYA WELFARE

FUNDATION, LUCKNOW

TAEKWONDO
CHAMPIONSHIP

DISTRICT PLAY GROUP

षष्ठ अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1 निष्कर्ष

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध डीएवी किड्स केयर अध्ययन के परिणामों से जो निष्कर्ष प्राप्त हुए वे निम्नवत् है-

- छात्रों को सांस्कृतिक शिक्षा से अवगत करना चाहिए।
- छात्रों को सामाजिक जागरूकता अभियान में भी सम्मलित करना चाहिए।
- छात्रों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता की कमी होती है जिससे वे प्रकृति को समझने में असमर्थ होते है अतः उन्हें इसके प्रति भी जागरूक करना चाहिए।
- वर्तमान समय में छात्रों में आचरण के प्रति बहुत ही उदासीनता देखी जा रही है यदि हम सब इसके प्रति सजग नही हुए तो आने वाले समय में मानवता का विनाश होना लगभग तय है इससे बचने के लिए हमें अभी से ही प्रभावकारी शिक्षण प्रणाली को अपनाना चाहिए।
- इन्होने अपने जीवन काल में देखा कि संस्कृति का ह्रास होता जा रहा है। बच्चों में इसकी जानकारी का आभाव है इसलिए हमें अपने संस्कृति को बचानें के लिए ऐसे कदम उठाना चाहिए जिससे बच्चों को अधिक से अधिक लाभ मिले।
- छात्र प्रारंभ में संकोची होते है अतः उन्हें अनिवार्य रूप से प्रेरित करना चाहिए।
- संस्कृतिक ज्ञान परीक्षा का आयोजन करवाना चाहिए जिससे छात्रों में जागरूकता का समावेश हो।
- अनुशासन ही सफलता की कुंजी है। छात्रों को अनुशासित रहने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- छात्रों को क्रियाशील रहने के लिए पाठ्यक्रम में प्रावधान किया जाना चाहिए है।
- छात्रों को सामाजिक ज्ञान से परिचित करवाना चाहिए।
- छात्रों के साथ-साथ अभिभावकों को भी अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन ईमानदारी से करना चाहिए।

- शिक्षको के साथ-साथ अभिभावकों को भी छात्रों से बहुत ही विनम्र एवं सरल भाषा का प्रयोग करना चाहिए।
- छात्रों में अनुकरण करने की शक्ति बहुत तीव्र होती है अतः उसे ऐसे वातावरण में रखना चाहिए जहाँ नकारात्मक प्रभाव से वह दूर रहे।
- छात्र अनुकरण करके सीखते है अतः अभिभावकों अपने व्यवहार में विनम्रता रखना चाहिए।
- छात्र में भाषा विकास के लिए प्रभावी तरीके अपनाना चाहिए।
- छात्रों की जागरूकता के लिए अवलोकन पद्धति का प्रोयोग करना चाहिए।
- छात्रों में सहयोग की भावना को विकसित करना चाहिए।
- शिक्षक को मृदुभाषी होना चाहिए।
- शिक्षक को अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह ईमानदारी से करना चाहिए।

6.1.1 सामाजिक कार्य सम्बन्धी

- हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति को सात आततायी या शत्रु बुरी तरह से जकड़े हुए हैं- मस्तिष्क, दण्ड, परीक्षा, कुरुप-भवन, अत्यधिक कार्य, स्वाभिमान रहित अध्यापक तथा संकुचित मनोवृत्ति के माता-पिता। बेचारे विद्यार्थी को इतनी अधिक पुस्तकें पढ़नी पड़ती है, इतने प्रकार के विषयों का अध्ययन करना पड़ता है कि उसका दिमाक, शरीर और मन सब पिस जाता है। सिवाय पढ़ने और पढ़कर परीक्षा पास करने के वह कुछ और सोच ही नही सकता अतः वर्तमान शिक्षा पद्धति में सुधार की आवश्यकता है।
- अपने भारत देश को परम वैभव के शिखर पर और जगद्गुरु के आसन पर पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए प्राचीन सर्वांगीण भारतीय शिक्षण पद्धति को अपनाना होगा। इसकी जड़ों को सींचना होगा और स्वयं इसकी जड़ो से हमें जुडना होगा।
- पश्चिम के विनाशकारी आकर्षण से स्वयं को मुक्त कर उसकी तिलांजलि से भारत की जड़ों से सींचना और इसकी जड़ों से जुडना तो शहादत ही है। बगैर ऐसी शहादत के कतईं नहीं होगा भारत का उदय दो सौ वर्षों से नष्ट हो चुकी प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रद्धति का पुनः उदय करने के लिए सभी को जाग्रत होने की आवश्कता है।

6.2 शैक्षिक उपादेयता

किसी भी सोद्देश्य कार्य के शैक्षिक निहितार्थ अवश्य होते है। उस कार्य की सार्थकता उसके शैक्षिक निहितार्थ में होती है। अर्थात किसी भी शैक्षिक उदेश्य का महत्व तभी निर्धारित होता है, जब उसकी शैक्षिक परिवेश में उपयोगिता स्थापित की जा सके।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की शैक्षिक उपादेयता निम्नवत रूप में वर्णित है-

6.2.1 विद्यार्थियों के लिए

प्रस्तुत शोध कार्य विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष एवं सुझाव के आधार पर छात्र प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन को नई दिशा दे सकेगें एवं शिक्षा के सही अर्थ को जानकर शैक्षिक जीवन में एक नूतन परिवर्तन कर सकेगें। वे शिक्षा को केवल रोजगार का साधन न मानकर शिक्षा के सम्यक अर्थ को अपने जीवन में उतारकर इन्द्रियों व मन को नियंत्रित कर जीवन जीना सीख सकेंगे।

6.2.2 शिक्षकों के लिए

एक आदर्श शिक्षक के गुणों को समझ कर अपने जीवन को सरल व प्रभावकारी बनाने में प्रेरणा प्राप्त कर सकते है। भारत देश की सभ्यता को जीवंत रखने व उसे और प्रभावी बनाने में देशहित में कार्य कर सकते है। हमारे देश की वैदिक सभ्यता को पुनः जागरण करने में मदद करसकते है और इस विनाशकरी शिक्षण व्यस्था से आने वाली पीढ़ी को बचा सकते हैं।

आज दुनिया भर में, विशेषज्ञ अपने भारत में व्याप्त सभी प्रकार की समस्याओं में सबसे प्रमुख समस्या है- भ्रष्टाचार, जिसके मूल में है चारित्रिक पतन और नैतिक, मूल्यों का क्षरण। इसका सीधा सम्बन्ध शिक्षा और संस्कार से है। चारित्रिक पतन और नैतिक-क्षरण का अर्थ सिर्फ कानून उल्लंघन और अनुचित यौनकर्म नही है यह तो इसकी पश्चिमी अवधाणा है। पश्चिम की औद्योगिक क्रान्ति के औपनिवेशिक उफान ने एक ओर जहाँ व्यक्ति की जीवन शैली को परिवर्तित कर दिया वही दूसरी ओर उसने चरित्र और चिन्तन को बदल दिया तो नैतिक मूल्य भी स्वतः बदल गए।

भारत की प्राचीन शिक्षण पद्धति की इस अवधारणा पर गीतांजली जी तथा उनके स्कूल डीएवी में पढ़ने वाले विद्यार्थियों और उनके अभिभावकों के समन्वित प्रयास से थामस, मैकाले की अंग्रेजी शिक्षण पद्धति के विरुद्ध फतेहपुर में जो प्रयोग हो रहा है, उसका ठोस परिणाम आना अभी बाकी है किन्तु उसकी सार्थकता अभी से दिखाई देने लगी हैं। शिक्षा पा रहे वहाँ के एक-एक विद्यार्थी महंगे से महंगे कान्वेन्ट स्कूलों के हजार-हजार विद्यार्थियों पर भारी पड़े रहे हैं। मैकाले-अंग्रेजी शिक्षण पद्धति को सर्वनाशकारी जहरीली मानने वाली गीतांजली जी का मानना है, कि आज अधिक से अधिक धनार्जन करने एवं अधिकाधिक मुनाफा कमाने की आपाधापी के कारण भ्रष्टाचार व परिवार-विघटन से लेकर आर्थिक शोषण-वर्गीकरण व पर्यावरण-प्रदूषण तक विभिन्न समस्याओं का जो ग्राफ बढ़ता जा रहा है और अनियंत्रित पशुवत् आचार-व्यवहार के कारण लूट-मार-बलात्कार जैसे अपराधो की जो बाढ़ सी आती जा रही है, उन सबके मूल में पश्चिम की यही एकपक्षीय भोगवादी बाजारवादी औपनिवेशिक अंग्रेजी शिक्षण-पद्धति और उससे निर्मित असमाजिक अपसंस्कृति है। कठोर से कठोर कानून बना कर भी दुर्विचारों और दुश्चिन्तन से उत्पन्न होने वाली उपरोक्त समस्याओं-अवांद्नीयताओं का निराकरण सम्भव नही है, बल्कि प्राचीन भारत की गुरुकुलीय शिक्षण-पद्धति में ही समाधान सन्निहित हैं।

6.3 अध्ययन के सुझाव

- शोध अध्ययन के निष्कर्ष यह स्पष्ट करते है कि वर्तमान शिक्षा पद्धति की स्थिति निम्न है अतः प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति के पुनः उदय करने हेतु विशेष शैक्षिक कार्यक्रम बनाया जाना चाहिए साथ ही सभी वर्गों के छात्रों को उसमे सम्मिलित करने हेतु प्रयत्न किया जाना चाहिए।
- आधुनिक शिक्षण संस्थानों में प्राथमिक शिक्षा को महत्व पूर्ण दर्जा मिलना चाहिए।
- आधुनिक शिक्षा संस्थानों मे वैदिक शिक्षा के तत्व, वैज्ञानिक शिक्षण पद्धति, संस्कारक्षम वातावरण निर्मित करने हेतु व्यक्तिगत तथा संस्थागत स्तर पर कार्य करना चाहिए।
- वैदिक कालीन शिक्षा हेतु नवीन गुरुकुलों की स्थापना के लिए, भूमि एवं अन्य संसाधन उपलब्ध कराने वाले दानदाताओं को प्रेरित किया जाना चाहिए।
- इस प्रकार के स्कूलों के संचालन में आने वाली प्रशासनिक बाधाओं को न्यूनतम करते हुए समकक्षता आदि सुविधाऐं प्रदान करने का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए।
- व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर उन्हे समाज एवं राष्ट्रोपयोगी नागरिक बनाने वाली वैदिक शिक्षा प्रणाली में अपने बालक-बालिकाओं को प्रवेश दिलाने के लिए अभिभावकों को प्रेरित करना चाहिए।

6.3.1 अभिभावकों को सुझाव

- बच्चों को स्कूल जाने और वैदिक आचरण को पालन करने के लिए प्रेरित करें।
- सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए छात्रों को प्रेरित करें।
- बच्चों को स्कूल की विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें।
- शिक्षकों के साथ नियमित रूप से संपर्क में रहें और अपने बच्चे की प्रगति के बारे में जानकारी प्राप्त करते रहें।
- घर पर अध्ययन के लिए एक शांत और आरामदायक वातावरण बनाएं।
- बच्चों की रुचियों को प्रोत्साहित करें और उन्हें उन गतिविधियों में शामिल होने दें जो उन्हें पसंद हैं।

6.4 भावी शोध हेतु सुझाव

समय धन एवं प्रशासनिक कठिनाइयों के करण किसी भी अध्ययन के लिए एक साथ सभी सम्बन्धित चरों को शामिल कर उन विचार नही किया जा सकता। अतः कोई भी अध्ययन निश्चित चरों तक सीमित रहता है किन्तु उसी क्षेत्र में और कार्य अन्य शोधार्थियों

द्वारा किये जा सकते है ताकि उन चरों के सम्बन्धों का अधिक स्पष्ट निरुपण हो सके इसके लिए अग्रांकित कुछ सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं-

1. भावी अनुसंधान में वर्तमान शिक्षा प्रणाली तथा वैदिक शिक्षा प्रणाली में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
2. भावी अध्ययन में विभिन्न डीएवी स्कूलों को सम्मिलित किया जा सकता है।
3. भावी अध्ययन में ऐसे स्कूलों को सम्मिलित किया जा सकता है जो केवल बालिकाओं के लिए हों।
4. भावी शोध में शिक्षा के क्षेत्र में चल रहे अन्य अभिनव प्रयोगों को सम्मिलित किया जा सकता है।
5. डीएवी किड्स केयर, फतेहपुर का अन्य सरकारी/निजी स्कूलों से तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- *कुमारी, मंजू, (2005)। मलिन बस्तियों में निवास करने वाले विशिष्ट जाति समूह की लड़कियों का शैक्षिक, व्यावसायिक स्तर तथा उनकी शिक्षा के प्रति अभिभावकों का अभिमत। दयालबाग एजूकेशन इन्स्टीट्यूट, (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग, आगरा।*
- लाल, रमन बिहारी (*2010-2011*)। *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त*, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ।
- *रामदास (2014)। उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं विषय सजगता के सन्दर्भ में कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट अनुप्रयोग सम्बन्धी कौशलों का अध्ययन। पी०एच०डी०, शिक्षाशास्त्र, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।*
- *अग्निहोत्री, रेनू वाला (2014)। शिक्षा में अभिनव प्रयोग: देव संस्कृति विश्वविद्यालय। एम०एड० लघु शोध प्रबन्ध। अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)।*
- *मोहन, आनंद (2018)। शिक्षा में अभिनव प्रयोग: पूर्व माध्यमिक विद्यालय,बरहेण्डा क्षेत्र-नरैनी, जिला-बाँदा उत्तर प्रदेश। एम०एड० लघु शोध प्रबन्ध। अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)।*
- *गुप्ता, प्रीती (2019)। शिक्षा में अभिनव प्रयोग: हेमचन्द्राचार्य संस्कृत पाठशाला। एम०एड० लघु शोध प्रबन्ध। अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)।*
- *द्विवेदी, सुरेश कुमार (2019)। रामकृष्ण मिशन का शैक्षिक योगदान। एम०एड० लघु शोध प्रबन्ध। अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)।*
- *कुमार, अमित (2020)। बाँदा जनपद के अनुकरणीय परिषदीय विद्यालय: एक अध्ययन। एम०एड० लघु शोध प्रबन्ध। अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)।*
- *यादव, राकेश कुमार सिंह (2021)। वनवासी कल्याण आश्रम का शैक्षिक योगदान। एम०एड० लघु शोध प्रबन्ध। अतर्रा महाविद्यालय, अतर्रा (बाँदा)।*

परिशिष्ट I

डीएवी किड्स केयर अवलोकन चित्रावली

Notice Board

Welcome to My World
We Are Friends

Welcome to My World
We Are Friends

परिशिष्ट II

डीएवी किड्स केयर: चित्रों के झरोखों से

परिशिष्ट III

फतेहपुर जिला मैप

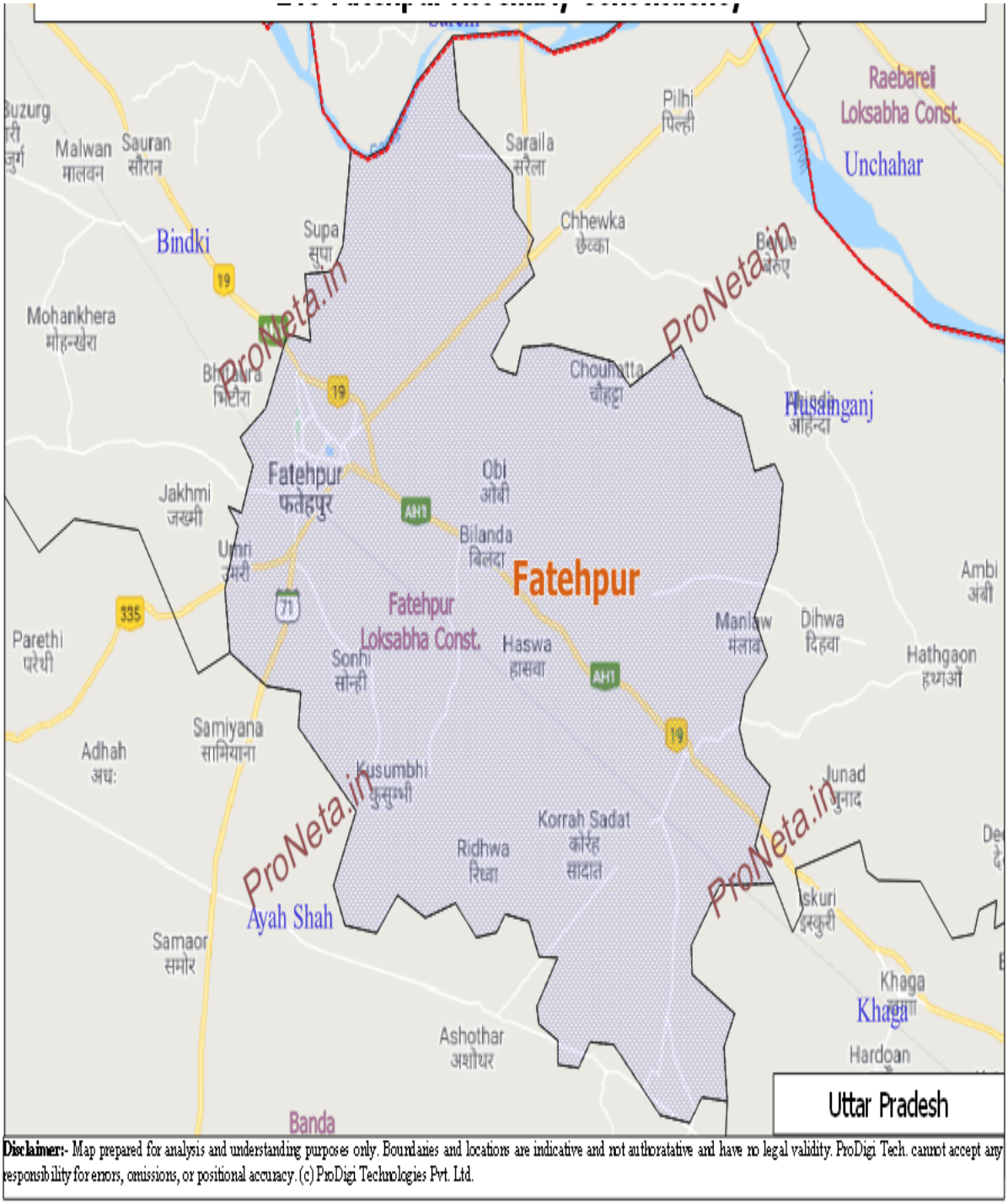

Disclaimer:- Map prepared for analysis and understanding purposes only. Boundaries and locations are indicative and not authoratative and have no legal validity. ProDigi Tech. cannot accept any responsibility for errors, omissions, or positional accuracy. (c) ProDigi Technologies Pvt. Ltd.

ISBN 978-93-343-1013-9